ज्ञानामृत

जनवरी, 1985
वर्ष 20 ❋ अंक 7

मूल्य 1.35

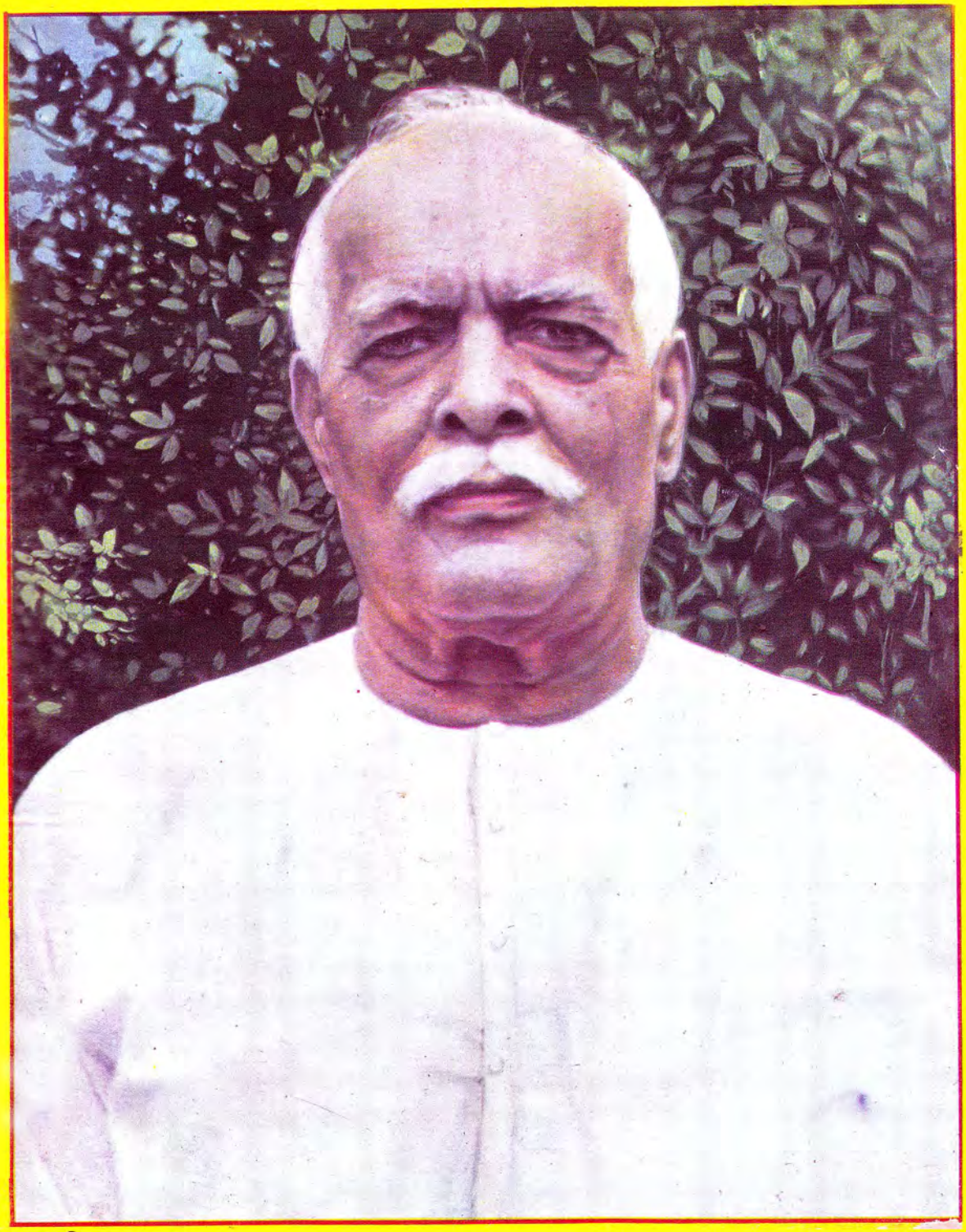

प्रजापिता ब्रह्मा

सचित्र समाचार

पाण्डव भवन, माउंट आबू में ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि जी, मुख्य प्रशासिका ब्र०कु० ई० वि० विद्यालय तथा सहायक प्रशासिका ब्र०कु० चन्द्रमणी जी आदिवासी मज़दूरों को गर्म कपड़े, कम्बल आदि बांटते हुए।

ब्र०कु० जगदीश चन्द्र जी अपनी विदेश यात्रा के दौरान नेपाल के प्रधान मन्त्री भ्राता लोकेन्द्र बहादुर चन्द को ईश्वरीय सन्देश देते हुए।

भारत सरकार के संसद के मामलों के तथा आवास तथा निर्माण मन्त्री भ्राता बूटा सिंह जी के पांडव भवन, माउंट आबू में पधारने पर उन्हें ब्र०कु० दादी प्रकाशमणी जी शाल भेंट करते हुए।

मद्रास में आध्यात्मिक संग्रहालय का उद्घाटन मद्रास की शरीफ बहिन सरोजिनी वरदापन्न ने किया। ब्र०कु० अन्नपूर्ण साथ में हैं।

फिलपाईन की लोक सभा के पूर्व अध्यक्ष तथा उच्चतम न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश को ब्र०कु० जगदीश चन्द्र जी ईश्वरीय ज्ञान के रहस्य समझाते हुए।

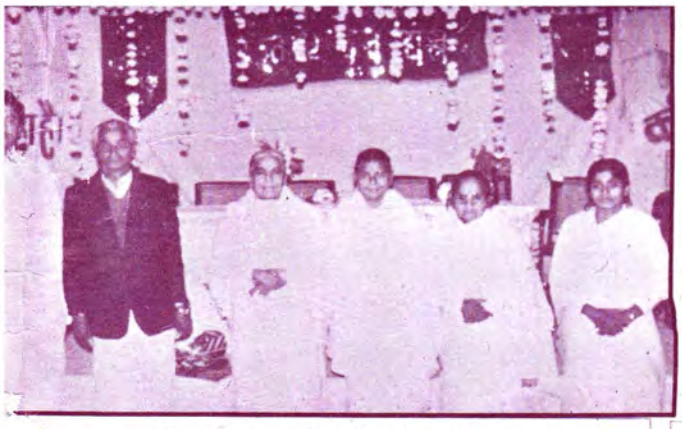

यवतमाल में एक सभा में ईश्वरीय संदेश सुनाने के पश्चात् ब्र०कु० मनोहर इन्द्रा, ब्र०कु० पुष्पा तथा भ्राता उमेश चन्द्र त्रिवेदी तथा अन्य ।

सम्बलपुर में उड़ीसा के व्यापार, परिश्रम तथा व्यवसाय मन्त्री भ्राता उपेन्द्र दीक्षित, ब्र०कु० दादी निर्मलशान्ता ब्र०कु० पावर्ती तथा अन्य मोमबत्तियां जला कर विश्व शान्ति आध्यात्मिक मेले का उद्घाटन करते हुए ।

मनीला में ब्र०कु० जगदीश चन्द्र जी द्वारा 'पुर्नजन्म' पर भाषण सुनते श्रोतगण ।

दुबई में, भारत की पूर्व प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्द्रा गांधी के निधन पर आयोजित सभा में ब्र०कु० ज्योति ने 'आन्तरिक शान्ति' पर प्रवचन किया । चित्र में वे अन्य महिलाओं के साथ उपस्थित हैं । →

न्यूज़ीलैण्ड हेमिलटन में ब्र०कु० जगदीश चन्द्र जी ईश्वरीय सन्देश देते हुए । ब्र०कु० भावना उनका परिचय करा रही हैं ।

नेपाल-काठमाण्डो में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश भ्राता बासुदेव शर्मा जी ने किया । वे अपने विचार व्यक्त करते हुए ।

Regd. No. 10563/65—D(E)—70

काठमाण्डो में नेपाल के महाराजा विरेन्द्र वीर विक्रम शाह देव के सचिव भ्राता रंजनराज खनाल जी को भ्राता जगदीश जी ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ।

काठमाण्डो में नेपाल के उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश भ्राता नयन बहादुर खत्री जी को ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र०कु० जगदीश चन्द्र जी ।

भोपाल में इन्द्रा गांधी जी के जन्मदिवस पर मुख्य मन्त्री भ्राता अर्जुन सिंह जी को इन्द्रा गांधी के प्रति कविता 'स्मृति सुमन' गोल्डन अक्षरों में ब्र०कु० शैलम व ब्र०कु० प्रतिभा भेंट करते हुए ।

ब्र०कु० कोनी जर्मनी के राष्ट्रपति प्रो० कार्ल मारस्टि को शान्ति घोषणा पत्र भेंट करते हुए ।

सम्बलपुर में हुए 'विश्व शान्ति आध्यात्मिक मेले' के उद्घाटन समारोह में ब्र०कु० निर्मल शान्ता सम्बोधित करते हुए । उनके दाईं ओर उड़ीसा के व्यापार, परिश्रम तथा व्यवसाय मन्त्री भ्राता उपेन्द्र जी विराजमान हैं ।

अमृत-सूची

क्रम सं०	विषय	पृष्ठ
१.	ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि जी का स्मृति दिवस पर सर्व के प्रति सन्देश	१
२.	समर्पणमयता, सेवा और पवित्रता की चेतन मूर्ति थे ब्रह्मा बाबा और वे थे कन्याओं-माताओं के द्वारा क्रान्ति के संचालक (सम्पादकीय)	२
३.	बाबा करते थे हमें याद प्यार और नमस्ते	८
४.	आदर्श मित्र कौन ?	१२
५.	यथा राजा तथा प्रजा	१३
६.	मैं विश्व का मूल्यवान रत्न कैसे बना	१५
७.	नव रचना का आधार हो तुम (कविता)	१७
८.	ज्ञान रत्नों की महादानी— दादी रत्नमोहिनी	१८
९.	'स्मृति दिवस'—उपरामता का प्रेरक	२१
१०.	साकार देखा है (कविता)	२४
११.	बाबा ने मुझे शेरनी बनाया	२५
१२.	सचित्र समाचार	२८
१३.	विश्व को अप्रतिम प्रतिमूर्ति—बाबा	३०
१४.	आध्यात्मिक सेवा समाचार	३२
१५.	आओ खेल खेलें	३२

ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि जी का स्मृति दिवस पर सर्व के प्रति सन्देश

सारे विश्व की आत्माओं के प्रति मेरी यही शुभ-कामना है कि हर आत्मा इस मृत्यु के भय से परे होकर कालपर विजय प्राप्त करे। अपने मीठे शान्तिधाम घर में चलने के लिये स्वयं को पापों से मुक्त करे ताकि आने वाली सच्ची सुख, शान्ति, पवित्रता की दुनिया—स्वर्ग में अपने राजभाग का अधिकार प्राप्त कर सके।

स्मृति दिवस को प्राप्ति दिवस भी कहा जाता है। तो सर्व आत्माएं अपने पिता परमात्मा से सर्व खज़ाने पाकर सम्पन्न बनें। तो विश्व से हाहाकार समाप्त होकर जयजयकार की शहनाईयाँ गूंज उठें।

बेहद का बाप अभी खड़े होकर भुजाए फैलाए पुकार रहा है···रातदिन मीठे बाबा के सुन्दर आलाप कानों में गूंज रहे हैं कि आओ बच्चे··· आओ प्यारे बच्चे···मैं वतन में तुम्हारा इन्तज़ार कर रहा हूँ···जल्दी आओ···सम्पन्न बन आओ तो अपने प्यारे घर शान्तिधाम उड़कर चल···

ये बाबा के मधुर बोल हमें बार-बार पुकार रहे हैं इसलिए सभी ब्राह्मण बच्चों को दादी का सन्देश है कि, आओ हम सभी मिलकर, बाबा के इन्तज़ार की घड़ियों को समीप लाकर चलें अपने बाबा के घर···

समर्पणमयता, सेवा और पवित्रता की चेतन मूर्ति थे ब्रह्मा बाबा और वे थे कन्याओं-माताओं के द्वारा क्रान्ति के संचालक

यदि हम विश्व के धार्मिक इतिहास को उठा कर देखें तो हम पायेंगे कि सभी धर्म स्थापकों ने त्याग तो किया ही। इब्राहिम को अपने नगर-निवासियों के विरोध के कारण घर तो छोड़ना ही पड़ा था। उसने जब अपने मूर्तिकार पिता द्वारा बनाई गई देव-मूर्तियों को तोड़ दिया तो उसे नगर-निवासियों की ओर से अपना जीवन असुरक्षित महसूस हुआ। उसका त्याग किसी और प्रकार से था। उसने अपने नगर और मित्र सम्बन्धियों का त्याग किया था। परन्तु जब वह वहाँ से जाकर दूसरे स्थान पर बसा तो उसके पास अपना धन था। तभी तो उसने जाकर भूमि खरीदी थी और पशु पाले थे। उसके बाद उसने घरेलू जीवन भी व्यतीत किया और उसकी सन्तति भी हुई तो भी उसने एक परमात्मा ही को मानने का लोगों को उपदेश दिया।

महात्मा बुद्ध ने अपने शाही जीवन और राज कुमार के रूप में अपने उत्तराधिकार का तथा अपनी सुन्दर धर्मपत्नी का त्याग किया था। परन्तु त्याग करने के बाद उसने भिक्षा द्वारा अपना जीवन-यापन किया। उसने अपनी सम्पत्ति को लोगों के कल्याणार्थ नहीं लगाया, न उसे भगवान के प्रति समर्पण किया (क्योंकि भगवान के अस्तित्व के बारे में तो वह अन्त तक ही मौन था) बल्कि संसार में दुःख देखकर वैराग्य की लहर में उसने उनका त्याग अवश्य किया। उसे परमपिता परमात्मा का साक्षात्कार या अनुभव नहीं हुआ और अपने राज्य का त्याग उसने उस अनुभव के बाद नहीं किया बल्कि सत्यता की खोज के लक्ष्य से और आत्म-अनुभूति के उद्देश्य से उसने इनका त्याग किया।

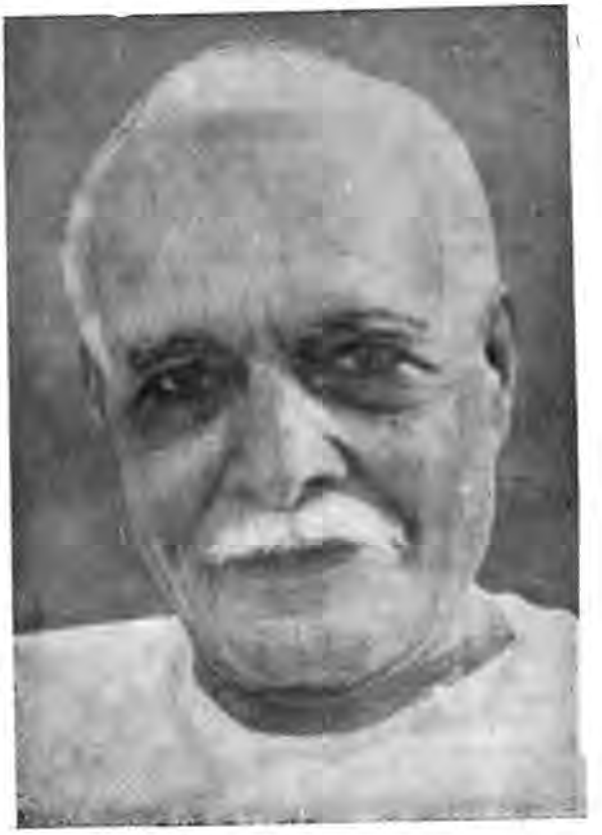

ब्रह्मा बाबा—स्नेह मूर्ति और नम्र मूर्ति

बाद में कई वर्ष तक उसने कठोर जीवन व्यतीत किया परन्तु उससे उसका शरीर दुबला हो गया और उसने स्वयं ही अपने उपदेशों में कहा कि ऐसा कठोर जीवन अनावश्यक है।

इस प्रकार उसका त्याग प्रभु के प्रति 'समर्पण' नहीं था और न ही लोक-कल्याणार्थ और उसके परिणामस्वरूप उसे भिक्षार्जन भी करना पड़ा। निःस्सन्देह उसकी धन में आसक्ति नहीं थी न ही उसे लोभ था।

ईसा के पास तो कोई विशेष धन या विशेष सम्पत्ति थे ही नहीं। वह विचार का धनी था परन्तु जहाँ तक सांसारिक दौलत और चल-अचल सम्पत्ति की बात है, वह कोई उल्लेखनीय मात्रा में उसके पास थी ही नहीं। उसने निस्सन्देह घरेलू जीवन का त्याग किया और दूसरों को भी कहा कि यदि वे परमशान्ति और परमात्मा की प्राप्ति चाहते हैं तो अपना सब-कुछ बेचकर ग़रीबों को बाँट दो। उसे भी जीवन में धन के प्रति आसक्ति व लोभ नहीं था और इस दृष्टिकोण से उसमें भी त्याग की भावना थी।

जहाँ तक मोहम्मद साहब की बात है उन्हें मक्का छोड़ कर मदीना में बसना पड़ा और उनका जीवन आगे-आगे चलकर सम्पन्न होता गया। यद्यपि उन्होंने मुस्लिम धर्म के प्रचार में अपना समय और अपनी शक्ति आदि का व्यय किया।

शंकराचार्य जी ने तो अपनी छोटी आयु में ही संन्यास ले लिया। उन्होंने अपने घर और माताजी को छोड़ दिया और स्थान-स्थान पर प्रचार किया। उनके जीवन में वैराग्य और संन्यास की प्रधानता थी। उन्होंने विवाह भी नहीं किया। वे आत्मा और परमात्मा में कोई भेद ही नहीं मानते थे। अतः प्रभु के समर्पित करने की तो बात ही नहीं उठ सकती और वैसे भी दौलत तो उनके पास थी ही नहीं।

इस परिपेक्ष में जब हम ब्रह्मा बाबा की जीवन कहानी पर विचार करते हैं तो विश्व के धार्मिक इतिहास में वे ही एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने परमपिता परमात्मा का साक्षात्कार करने के बाद लोककल्याणार्थ अपना तन, मन, धन ईश्वराज्ञा के अनुसार परमपिता परमात्मा के समर्पण कर दिया। कोई व्यक्ति अपनी सम्पत्ति का कुछ भाग भी दूसरों की सन्तान को नहीं देता। यदि कोई महादानी अपनी सारी सम्पत्ति का दान भी करता है, तो भी वह अपने मरने के बाद ही करने के लिए वसीयतनामा (Will) लिखता है। यदि कभी किसी ने दान किया भी होगा तो भी प्रभ-समर्पित कन्याओं-माताओं ही को उसका ट्रस्टी (प्रन्यासी; Trustee) नहीं बनाया होगा। विश्व के इतिहास में यदि ऐसा एक भी उदाहरण हो तो कोई बताये। ब्रह्मा बाबा ही एक ऐसे अद्वितीय व्यक्ति हुए हैं जिन्होंने जवाहिरात का अपना सारा धन्धा समेटकर अपने कई बड़े भवन, अपनी कई मोटर-गाड़ियाँ और अपनी सारी धन-राशि ही नहीं बल्कि अपना तन और मन भी सम्पूर्ण रूप से ईश्वरार्पण करके जन-जन की आध्यात्मिक सेवा के लिए लगा दिया। वे अपने घर और अपनी चल-अचल सम्पत्ति को देहाभिमानियों और अज्ञानियों के पास छोड़कर नहीं चले गए बल्कि त्याग और अर्पणमयता की भावना से उस धन को पवित्र करके, लोगों से दान या भिक्षा माँगने की परिपाटी को छोड़कर कन्याओं-माताओं इत्यादि को योगिनी, तपस्विनी, ज्ञान गुणदायिनी और शक्ति रूपा बनाने में अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया और लगभग १४-१५ वर्षों तक उसी धन से ही उनका पालन-पोषण और प्रशिक्षण हुआ। उसके बाद भी वे समस्त जीवन एक ट्रस्टी की न्याईं रहे और अथक रीति से विश्व-सेवा के कार्य में लगे रहे। 'नष्टोमोहः' और 'मामेकम् शरणं व्रज'—ये जो गीता के महावाक्य हैं, इनका प्रेक्टिकल साक्षात्कार उनके ही जीवन से होता है। उन्होंने कभी भी यज्ञ के पैसे को अपना पैसा नहीं समझा और उसे अपने निजी सुख के लिए प्रयोग नहीं किया। जिस तरह से यज्ञ के धन का व्यय होता था, उससे ही उनका यह दृष्टिकोण स्पष्ट होता था कि वे इसे शिव बाबा की दी हुई अमानत समझते हैं और शिव बाबा के प्रति समर्पित हुआ होने के कारण उसके एक-एक पैसे को अमूल्य समझते थे। आरती और पूजा करते समय भी लोग प्रभु को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि हे प्रभु-हम अपना तन, मन, धन आपको समर्पित करते हैं।

सम्पूर्ण पवित्रता का जीवन

शिव बाबा की प्रवेशता से पहले भी दादा के जीवन में धीरज और मानसिक शीतलता के गुण

थे। उनकी एक सुपुत्री जो ब्रह्माकुमारी निर्मल-शान्ता के नाम से इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय की एक प्रमुख कार्यकर्त्ता हैं, अपने बाल्यकाल के ऐसे कई वृत्तान्त सुनाते हुए बताती हैं कि बाबा प्रायः युक्ति और प्यार से उन बातों को भी हल करते थे जिन्हें आम गृहस्थ लोग आवेश और क्रोध और बच्चों की मार-पीट के द्वारा करने का यत्न करते हैं। इस विषय में एक अपने ही जीवन से सम्बन्धित उदाहरण देते हुए वे कहती हैं कि बाल-स्वभाव वश वे और उनकी दूसरी बहनें बाबा द्वारा घर में रखे हीरों को उठाकर छिपा लेते थे। जब बाबा देखते कि अपने स्थान पर हीरे कम संख्या में हैं तब वे समझ तो जाते ही कि हम बच्चियों ने उन्हें चमकदार देखकर अपना शौक पूरा करने के लिए उठाया होगा। परन्तु वे हीरे हमसे वापस लेने के लिए बाबा डाँट-डपट या गुस्से से काम नहीं लेते थे बल्कि युक्ति से कहते थे—"सभी बच्चियाँ इधर आओ। बताओ, तुम कितने हीरों की अंगूठी पहनोगे ?"

हम कहते—"बाबा हम १५ हीरों की अंगठी पहनेंगे।"

तब बाबा कहते—"अच्छा, तुम्हारे पास जितने हीरे हैं, वे ले आओ और बाकी हीरे हम उसमें अपनी तरफ से लगवाकर तुम्हें १५-१५ हीरों की अँगूठी बनवा देंगे।"

बाल-स्वभाव-वश हम दौड़े-दौड़े सभी हीरे ले आते और सचमुच बाबा उसमें अपनी ओर से और हीरे लगवा कर हमें १५-१५ हीरों को अँगूठी बनवा देते और साथ-साथ हमें शिक्षा भी देते कि "अच्छे बच्चे बिना पूछे चीज़ को उठाकर छिपाया नहीं करते। तुम वैसे भी अँगूठी बनवाने के लिए कहतो, तो हम बनवा देते।" इस प्रकार के कई उदाहरण वो और बृजेन्द्रा बहन सुनाया करती हैं।

उनके व्यापार काल के जीवन में अथवा बाद में ईश्वरीय विश्व विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने वाला कोई भी व्यक्ति यह नहीं कह सकता कि बाबा ने कभी अपशब्दों का प्रयोग किया, किसी का अपमान (Insult) किया या किसी को डाँटा-डपटा और तिरस्कृत किया।

पुनश्च, वे अपने व्यापारी जीवन में ईमानदार भी थे और किसी को तंग करके, गुमराह करके या शोषण करके धन नहीं कमाते थे। वे स्वभाव से मधुर और व्यवहार के सच्चे थे। इस विषय में नेपाल के भूतपूर्व कमान्डर इन चीफ की धर्मपत्नि, लक्ष्मी देवी राणा जी से पिछले दिनों काठमाण्डू में जो मेरा वार्तालाप हुआ, उसका कुछ अंश यहाँ उदत करना प्रासंगिक होगा। युवराज लक्ष्मी देवी राणा के धर्मपति कमान्डर इन चीफ रहने के बाद नार्वे, लण्डन तथा स्वीडन में नेपाल के राजदूत भी रहे और महाराजा महेन्द्र के भी निकट रहे।

बायीं ओर लेखक, मध्य में ब्र० कु० शीला,
दायीं ओर श्रीमति लक्ष्मीदेवी राणा

मैं—हम आपसे यह जानना चाहते हैं कि आप पहली बार बाबा से कब मिली थीं ?

उत्तर—विक्रमी सम्वत् १९८३ में।

मैं—उनकी आपसे क्या बातचीत हुई ?

उत्तर—जब बाबा जवाहिरात लेकर आते थे तो कहते थे—"आओ, आओ बेटी !"

मैं—उस समय आपकी क्या आयु थी और बाबा का आप पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर—१५-१६ वर्ष की आयु थी। वे धार्मिक थे क्योंकि स्पष्ट बोलते थे—"ये लो, वो नहीं लो

बेटी ! ये ठीक है, ये ज़ेवर लो", आदि ।

मैं—किस-किस दरवार में बाबा गये यहाँ पर ?

उत्तर—एक हमारे ससुर थे, एक शमशेर सिंह थे; भीष्म शमशेर के यहाँ भी गये ।

मैं—कितनी बार उन्हें आपने दरबार में देखा ?

उत्तर—दो बार देखा । एक बार संवत १९८३ में और दूसरी बार १९८४ में ।

मैं—तो महाराणा फैमिली से उनके अच्छे सम्बन्ध थे । किसी और विशेष अवसर पर भी उन्हें निमन्त्रण मिला था ?

उत्तर—उनके सम्बन्ध महाराणा फैमिली से बहुत अच्छ थे । निमन्त्रण मिलते ही रहते थे उन्हें ।

मैं—और कोई विशेष बात आप उनके बारे में हमें बतायें ।

उत्तर—५ वर्ष सोना बाबा के पास पड़ा रहा । कोई लेने नहीं गया । (राणी जी भूल ही गयी थीं कि उन्होंने बाबा के पास सोना भेजा है) गले का हार बनाना था । पीछे जब उसका आदमी आया तो बाबा ने उसे फौरन दे दिया ।

मैं—ऐसा कहने से भाव क्या है ?

उत्तर—यही कि बाबा सच्चे स्वभाव के थे ।

उपरोक्त से स्पष्ट है कि बाबा की ईमानदारी की छाप सभी पर थी । पाँच वर्ष तक भी बाबा के पास पड़ी हुई अमानत अमानत ही थी । और दादा ऐसे व्यापारी थे जो स्पष्ट बता देते थे कि ये चीज उच्च श्रेणी की और ये निम्न श्रेणी की है । फिर उनमें शिव बाबा की प्रवेशता के बाद तो वृत्ति एकदम उपराम और अनासक्त हो गई । तब उन में लोभ का नाम भी न रहा । कोई भी नहीं कह सकता कि बाबा ने उनसे कभी कोई चीज माँगी या उनके मन में दूसरे से कोई चीज लेने का लोभ था बल्कि सबने उन्हें दाता के रूप में ही देखा । बाबा ने कभी किसी से अपने हाथ में कोई चीज नहीं ली । जब व्यापार समेटने के लिए बाबा ने

लेखक राजा तारक बहादुर शाह के साथ

अपने भागीदार से बात की तो भी बाबा ने उससे अधिक पूछताछ, चुक-चुकाव या कम-अधिक हिस्से की चर्चा नहीं की बल्कि जो और जितना उसने ठीक समझ कर दे दिया, उसे स्वीकार कर लिया ।

शिव बाबा की प्रवेशता से पहले भी बाबा में उदारता तो थी ही परन्तु प्रवेशता से कुछ पहले ही से उपरामता भी बढ़ती गई थी । अन्य बातों के साथ इस बात का उल्लेख नेपाल के राजा तारक बहादुर शाह जिन से ४ नवम्बर १९८४ को हमारी भेंट वार्ता हुई, ने भी किया । राजा तारक बहादुर शाह से हुई वार्ता का सार निम्नलिखित है:

मैं—आप तो बाबा के सम्पर्क में कई बार आये । क्या आप बाबा के व्यक्तित्व के बारे में कुछ बतायेंगे ?

राजा जी—हम लोग हफ्ते-दस दिन में उनके पास जाते थे । बाबा की बहुत Catching Personality थी (आकर्षक व्यक्तित्व था) Simplicity (सादगी और सरलता) भी थी । उनका विचार था कि इस दुनिया की चीजें काम नहीं आने वाली हैं । वे जौहरी थे । फिर भी कहा करते थे कि संग्रह करने में आनन्द नहीं है, त्याग में ही आनन्द है । जमा करने में आनन्द नहीं है ।

मैं—यह किस वर्ष की बात है ?

राजा जी—हमें यह नहीं याद । वैसे अब हम

८२ वर्ष के हैं और उस समय लगभग ३५ वर्ष के थे।

मैं—तो ये लगभग ४७ वर्ष पुरानी बात हुई।

राजा जी—हाँ हमारे घर में भी बाबा आते थे बिना रोक-टोक। घर घूंघट भी नहीं करते थे। २-३ घण्टा बातचीत चलती थी। उनका विचार था कि दुनिया की चीजें सभी छोड़कर जाना होगा और त्याग में ही आनन्द है। हमें भी यह विचार अच्छा लगता था। पीछे जाकर जो हुआ, हमें नहीं मालूम। (उनके इस कथन का यह भाव था कि उन्हें बहुत समय तक यह मालूम नहीं हो सका कि बाबा ने व्यापार छोड़ दिया और वे ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की स्थापना के निमित्त बने।) बाद में मालूम हुआ कि बाबा क्या से क्या बन गए।[1] Religious हो गए (धर्म-कार्य में ही लग गए)।

कलकत्ता भी हम जाते थे। वे हमें शौक से खिलाते-पिलाते थे। वे नेपाल में कम आते थे। लाल दरबार वालों के पास भी आते थे।...बाबा बहुत मज़ाक करने वाले भी थे।

हमें याद आता था, थोड़ा लम्बा थोड़ा गोरा चेहरा था, बहुत आकर्षण था। फिर उसके बाद मुलाकात नहीं हुई जब वे Religious हो गए।

मैं—क्या उस समय राज दरबार में राजा भीष्म शमशेर थे ?

राजा जी—बाद में भीष्म शमशेर का तो स्वर्ग-वास हो गया था। शायद उनका बेटा था—शमशेर सिंह। वे Rule (राज्य) करते थ उस समय। हमें याद है बाबा एक किताब रखते थे। उसे पढ़ते भी थे—देखते थे, लगता था धार्मिक किताब थी। उसका नाम तो हमारे ध्यान पर नहीं है।

मैं—जब बाबा आपको खाना खिलाते थे तो क्या वह Vegetarian (शाकाहारी) होता था ?

राजा जी—वो क्या खाते थे, हमें नहीं मालूम, लेकिन जब हम जाते थे तो सलाद-जैसा हमें कुछ खिलाते थे। हमें बहुत अच्छा लगता था। अभी

लाल दरबार जहाँ दादा नेपाल में ठहरा करते

तक भी उसकी याद कभी-कभी आती है। हमारे जनरल प्रताप शमशेर होते थे, हम भी होते थे। खाना खिलाने में बाबा शौकीन थे। Vegetarian (शाकाहारी) ही खिलाते थे।

मैं—बाबा का कोई पत्र भी आपके पास आता था कभी-कभी ?

राजा जी—हमारे पास तो नहीं आया। हमारे जनरल प्रताप शमशेर के पास आया होगा, अभी तो वह पत्र कहाँ मिलेगा !

मैं—हमारे पास उनका Original पत्र भी है, उसकी Photostat (फ़ोटोस्टेट) कराके आपके पास भेज देंगे।

राजा जी—जनरल शमशेर या भीष्म शमशेर

नेपाल नरेश का सिंह दरबार

१. एक बार नेपाल में ब्र० कु० ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के एक सार्वजनिक उत्सव में इन्होंने बाबा का एक चित्र देखकर पहचाना और उनके विषय में पूछा। तो इन्हें बाद के वृत्तान्त मालूम हुए।

के पास हो सकता है। बहादुर शमशेर के पास भी हो सकता है। बाबा उनके पास भी जाते रहते थे।

शीला बहन (यह भी इस लेखक के साथ थीं)—बहादुर शमशेर की रानी तो हमारे आश्रम पर भी आती हैं। उन्होंने जगह भी दी है जहाँ हमने अभी अपना आश्रम बनाया है, पुतली सड़क पर। उसमें आने के लिए हम आपको invite भी करते हैं।

राजा जी—रानी आप लोगों की बहुत तारीफ़ करती है, आपके आश्रम की भी बहुत तारीफ़ करती रहती है।

मैं—बाबा के जो लौकिक बच्चे थे—लड़के लड़कियाँ, उनसे भी कभी आप मिले थे ?

राजा जी—उनसे तो नहीं मिले। बाबा बहुत शान्त मूर्त थे। व्यापारी जैसे नहीं लगते थे। बहुत खूबसूरत मूर्ति थे···बाबा की याद भी बहुत आती है।

संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि पवित्रता एवं शान्ति की मूर्ति होते हुए ब्रह्मा बाबा ने सहनशीलता, मधुरता, स्नेह और सहानुभूति रूप दिव्य गुणों के आधार से वह कार्य किया जो विश्व के इतिहास में अद्वितीय है। उस काल में जब महिलाएँ बुर्के में रहती थीं या सिन्ध में अपने समस्त मुखमण्डल को ढक कर, केवल एक आँख खुली रख कर ही कहीं जा सकती थीं, जब अविद्या, अशिक्षा,

तीसरे दशक में सिन्ध में महिलाएँ केवल एक आँख ही पर्दे से बाहर

धार्मिक संकीर्णता, जाति-पांति का भेद, निरर्थक रीति-रिवाज और शकुनवाद में लोग धसे हुए थे, उस काल से ब्रह्मा ने शिव बाबा के निर्देश से तथा उनका साकार माध्यम बनकर ऐसा कार्य किया जिसका अन्य कोई भी उदाहरण विश्व के इतिहास में ढूँढने से भी नहीं मिल सकता।

—जगदीश

(शेष पृष्ठ ३२ का)

अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस अवसर पर वर्धा के अनेक मुख्य अधिकारी उपस्थित थे। इस अवसर पर शहर के मुख्य स्थानों से शोभा यात्रा भी निकाली गयी। प्रेस कान्फ्रेंस का आयोजन किया गया। राजयोग शिविर व चैतन्य देवियों की झाँकी द्वारा अनेक आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश दिया गया।

आजमगढ़—सेवा केन्द्र की तरफ से कार्तिक पूर्णिमा स्नान के अवसर पर दोहरी घाट में विकास क्षेत्र के सामने आध्यात्मिक प्रदर्शनी का कार्यक्रम रखा गया। प्रदर्शनी के साथ-साथ प्रोजेक्टर शो के द्वारा भी विकास खण्ड अधिकारी के आग्रह पर विकास क्षेत्र में ही प्रदर्शनी दिखाई गई। इसके अलावा सूरजपुर, जियनपुर में भी प्रोजेक्टर शो के द्वारा ईश्वरीय सन्देश दिया।

पण जी-गोवा—सेवा केन्द्र की तरफ से डिचोली गांव में दो दिन की सहज राजयोग चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन राधाकृष्ण टेक्स्टाईल के मालिक भ्राता अनंत सावईकर द्वारा सम्पन्न हुआ। इसके अलावा मठ में युवा वर्ग की स्लाईड्स भी दिखाई गयी। जिससे अनेकों ने लाभ लिया।

बाबा करते थे हमें याद प्यार और नमस्ते

ब्र० कु० आत्मप्रकाश, आबू पर्वत

मैं पिछले मास की अठारह तारीख को प्रात: क्लास के उपरान्त प्राण प्यारे बाबा से रूह-रिहान करने बाबा की झोपड़ी की ओर जा रहा था। अचानक बगीचे में मौलाई मस्ती में बैठी हुई स्नेह-मयी प्रकाशमयी दादी जी पर मेरी दृष्टि पड़ी। उन्हों के दिव्य गुणों से भरपूर चेहरे के दिव्य झलक ने मेरे चलते हुए कदम रोक दिये। दादी जी के चेहरे से मुझे ऐसा अनुभव हो रहा था कि दादीजी इस साकारी दुनिया से पार कहीं दूर की दुनिया के नज़ारे देखने में खोई हुई हैं। उन्हों के चेहरे पर अनोखा दिव्य तेज चमक रहा था, जिसने मुझे चुम्बक की तरह आकर्षित किया। मेरे कदम उन्हों के तरफ चलने लगे। मैं दूर से ही उनकी रूहानी मस्ती को निहारता रहा। मुझे उन्हों के साकार शरीर के चहुँ ओर लाईट ही लाईट दिखाई दी। कुछ ही मिनटों के बाद जब दादीजी की शक्ति-शाली नज़र से मेरी नज़र मिल गई तो अनहद शक्तियों का प्रवाह मुझ में आ गया, ऐसा मैंने अनु-भव किया। उनकी मधुर मुस्कान के जादू ने मेरे दिल पर अमिट छाप लगाई। जब मैं उन्हों के समक्ष जाकर खड़ा हुआ तो दादीजी के मुखारविंद से मधुर बोल उच्चारण हुए "अरे आत्म भैया, बाबा करते थे हमें याद प्यार और नमस्ते"। उन्हों के बोल मेरे दिल में तीर की तरह घुस गये और मेरे मन में एक के पीछे एक संकल्प चलने लगे कि सचमुच कितने महान भाग्यशाली हैं ये महान आत्माएँ ! जिस भगवान को द्वापर युग से करोड़ों प्रभु प्रेमियों ने अनगिनत बार प्रणाम करके फूलों के हार चढ़ाए, वो खुद आकर जिन्हें प्रणाम करता हो। ऐसा कौन होगा जिन्हें ऐसे महान आत्माओं

ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि

के भाग्य पर आश्चर्य न होता हो। लेकिन बलि-हारी है उन्हों के पुण्य कर्मों के पूँजी की जिससे उन्हें ये परम सौभाग्य प्राप्त हुआ। ऐसा सोचते-सोचते मेरे मुख से बोल निकले कि दादीजी, आप किस सोच में डूबी हुई थीं जिस कारण आपके मुख से ये मधुर बोल निकले। दादीजी ने मुस्कराते हुए कहा, आज सवेरे जब मैंने क्लास में बाबा की मुरली सुनाने के लिए हाथ में ली तो मेरी दृष्टि एकदम १८ दिसम्बर १९८४ पर पड़ी तो तुरन्त मुझे संकल्प चला कि बरोबर एक मास के बाद बाबा का स्मृति दिन आयेगा। स्मृति दिन की याद आते ही मेरे मानस पटल पर ब्रह्मा बाबा के साथ बिताई हुई सुहावनी घड़ियों के सुन्दर दृश्य उभरते गये। मुरली सुनाने के पश्चात् जब मैं बाबा के बगीचे में बैठ गई तो लम्बे समय तक मैं अनुभवों के सागर के तले में जाकर उस प्राणप्यारे बाबुल के साथ मधुर लीलाएँ खेलती रहीं। उस परमानन्द की अनुभूति ने मुझे इस साकारी दुनिया का भान भुला दिया था। मैं सुन्दर दृश्य देख रही थी कि बाबा मुरली सुनाने के बाद हम गोपगोपियों को याद प्यार और नमस्ते कर रहे हैं। इतने में ही

आप पर मेरी दृष्टि पड़ी। जिसके बाद जो दादीजी के साथ मेरी चर्चा चली वो दादीजी के ही भाव मैं पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत कर रहा हूँ—

प्रश्न—दादीजी, बाबा कैसे याद प्यार और नमस्ते करते थे ?

उत्तर—जब हम सभी ब्रह्मावत्स बाबा को प्यार से याद करते थे तो उसका उत्तर देने के लिए बाबा हमें याद करके मधुबन के छोटे हॉल में मुरली बजाने आते थे। मुरलीधर बाबा मुरली सुनाकर प्यार की लहरों में हमें लहराते थे। मुरली सुनाना समाप्त होने पर बाबा संदली से उठकर दायीं ओर के दरवाजे के पास खड़े होकर सभी को शक्तिशाली दृष्टि देते हुए "मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद प्यार और गुडमार्निंग, रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते" कहते हुए हम बच्चों के आगे सिर झुकाते थे। फिर हम सभी मिलकर एक साथ बाबा को नमस्ते करते थे।

प्रश्न—दादीजी, याद और प्यार का आपस में क्या सम्बन्ध है ?

उत्तर—याद और प्यार का बहुत गहरा संबंध है। जिससे हमारा प्यार होता है उसकी याद हमें स्वत: ही आती है। जिससे अति प्यार होता है उसकी याद हमें सताती है। इसी संदर्भ में जितना हम बाबा को याद करते हैं, उतना ही बाबा का प्यार हमें मिलता है। यदि कोई बिना याद किये ही बाबा का प्यार माँगे तो भला यह कैसे संभव है। इसलिए जिसे प्यार चाहिए वह बाबा को याद करें।

प्रश्न—दादीजी, आपने बाबा का प्यार पाने के लिए कौन-सी मुख्य धारणाओं को अपनाया था ?

उत्तर—देखो भैया, भगवान के प्यार के प्राप्ति का आधार है सम्पूर्ण पवित्रता। भगवान का प्यार पवित्र आत्माओं पर ही बरसता है। जितना हम पवित्र बनते जाते हैं तो आत्मा रूपी सुई (Needle) स्वच्छ बनती है जिसके फलस्वरूप शक्तिशाली चुम्बक (Magnet) परमात्मा के तरफ बरबस खिंचती है और प्यार के सागर में समा जाती है। ऐसी आत्माएँ ही दिलतख्तनशीन बनकर बाबा का सच्चा प्यार पाने का सौभाग्य प्राप्त करती हैं। बाबा कहते हैं जितनी पवित्रता, उतना ही भविष्य प्रालब्ध पाने की पात्रता होगी।

प्रश्न—दादीजी, बाबा छोटे बच्चों को नमस्ते क्यों करते थे ?

उत्तर—शिव बाबा ब्रह्मा बाबा द्वारा हमें सदा पाठ पढ़ाते थे कि मैं सभी का बाप होते भी निराकारी सो निरहंकारी हूँ। बाबा हमें सिर्फ नमस्ते ही नहीं करते थे लेकिन सदा कहते थे मैं तुम्हारा आज्ञाकारी सेवक (Obedient Servant) हूँ। नम्रता को बच्चों के जीवन में धारण कराने के लिए पहले बाबा ने स्वयं उस गुण को प्रत्यक्ष दिखाया जिससे बच्चों को बाबा का अनुकरण करना सहज अनुभव हो। इस गुण के आधार पर बाबा ने बच्चों का जीवन सरलता से महान बनाया।

प्रश्न—दादीजी, आपको बाबा से प्यार के सागर स्वरूप की अनुभूति कैसे होती थी ?

उत्तर—आत्म भैया, प्यार की बातें समझाई नहीं जातीं, ये तो स्वयं स्वाभाविक रूप से अनुभव की जातीं। जैसे देखो, जब भौंरा फूल में समा जाता है तो उसे कितना अथाह सुख प्राप्त होता है या जब चकोर चाँद पर मस्त हो जाता, तो कितना खुशी में नाचता है। ऐसे ही जब हम परमात्मा के प्यार में खो जाते हैं तो सारी दुनिया तथा सर्व सम्बन्धों से परे हो जाते हैं। जिससे अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलने लगते हैं, फलस्वरूप दुनिया से नष्ट-मोहा बनते हैं।

प्रश्न— दादीजी, जब आप सन्मुख बाबा की मुरली सुनती थीं तो आपको क्या अनुभव होता था ?

उत्तर—कहा जाता है मुरली मस्तानी, जिसके गुह्य राज़ जब बुद्धि में मनन होने लगते तो रोमांच खड़े हो जाते हैं। इस ईश्वरीय जीवन में ज्ञान के गुह्य रतन ही बुद्धि की सच्ची खुराक हैं, जीवन का

अमूल्य खज़ाना है। इस खज़ाने के आधार पर ही भविष्य २१ जन्मों के लिए राजभाग प्राप्त होता है।

जिस घड़ी बाबा की मुरली सन्मुख सुनते थे तो बापदादा का डबल फोर्स, एक तो बहुत बड़ी अथॉरिटी अनुभव होती थी और दूसरा साहस तथा शक्ति का अनुभव होता था। मुरली की मधुर तान कानों में गूँजते ही मनरूपी मोर नाचने लगता था। वह मुरली की अनोखी तान देह की एकदम सुधबुध भुलाकर विदेही बाप के साथ मधुर मिलन का अनुपम आनन्द की अनुभूति कराती थी। और ऐसा लगता था कि बाबा हमें बहुत बड़ा ज्ञान रत्नों का खज़ाना दे रहे हैं जिसके आगे दुनिया के सभी खज़ाने फीके हैं।

प्रश्न—दादीजी, अगर किसी कारण से आपकी कभी मुरली मिस होती होगी, तब आप क्या करती थीं ?

उत्तर—भैया, मैंने शुरू से यही अनुभव किया कि मुरली एक जीवन का सच्चा सहारा है जिसने हमारे जीवन को निखारा है। हाँ, अगर कभी यज्ञ सेवार्थ मुरली मिस होती थी तो दिल ऐसा तड़पता था जैसे नीर बिन मछली। जब तक बाबा के पास जाकर मुरली के दो महावाक्य नहीं सुनती थी तब तक दिल की प्यास नहीं बुझती थी। अभी भी मैं मुरली कभी मिस नहीं करती। मैं सदा समझती हूँ कि मुरली मिस करना अर्थात तकदीर मिस करना तथा मुरलीधर बाप का अनादर करना।

प्रश्न—दादीजी, आपका मधुबन में मुरली सुनाते समय का अनुभव कैसा रहता है ?

उत्तर—मुरली सुनाते समय मुझे बापदादा का डबल फोर्स स्वयं में अनुभव होता है। बाबा की गद्दी पर बैठते ही बुद्धि ऊपर उड़ने लगती है और ऐसा लगता है कि मुझ निमित्त आत्मा द्वारा बाबा मुरली सुना रहे हैं जिसे सुनकर सभी का दिल हर्षित हो रहा है।

और जब मुरली के अन्त में याद प्यार और नमस्ते सुनाती हूँ तो मैं नहीं लेकिन बाबा अपने बच्चों को मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चे कहकर याद प्यार और नमस्ते देते हुए स्वयं के दिल में समाते और मैं भी उसमें समा जाती हूँ।

प्रश्न—दादीजी, क्या बाबा ने अन्तिम दिन भी मुरली सुनाई थी ?

उत्तर—मुझे अच्छी तरह से याद है कि आदि से लेकर अन्त तक बाबा ने बच्चों को मुरली सुनाना कभी भी मिस नहीं किया। अन्तिम दिन भी ब्रह्मा बाबा का शरीर रूपी रथ अस्वस्थ होने पर भी रात्री क्लास में शिव बाबा ने ब्रह्मा मुख द्वारा मुरली सुनाई। बाद में बाबा बच्चों को याद प्यार और नमस्ते करके अपनी झोंपड़ी में आराम शैया पर लेटने गये। उस समय भी बाबा की अचल अडोल अवस्था थी। अन्तिम घड़ियों में बाबा ने मेरे हाथ में हाथ (Shake Hand) देते हुए शक्तिशाली दृष्टि से मुझे निहारा। मुझे उस समय ऐसा अनुभव हुआ कि बाबा ने मुझे विशेष दिव्य शक्ति प्रदान की। तत्पश्चात् शिव बाबा की याद में पंछी उस शरीर रूपी डाल से उड़कर वतन में बाबा की गोद में समा गया। इस तरह अन्तिम घड़ियों तक भी बाबा ने हम बच्चों की अथक सेवा की।

प्रश्न—दादीजी, क्या हमें कल्प-कल्प ऐसे ही ब्रह्मा बाबा से मिलने का सौभाग्य प्राप्त नहीं होगा ? क्या हम इस अनुपम प्राप्ति से सदा ही वंछित रहेंगे ?

उत्तर—नहीं, नहीं आत्म भैया, ऐसी कोई बात नहीं। अपने बाबा कोई आम व्यक्तियों जैसे नहीं हैं जो शरीर छोड़ने के बाद कभी मिल न सकें। बाबा का सदा ही बच्चों से यह वायदा रहा है कि साथ रहेंगे, साथ जियेंगे और साथ चलेंगे। और यह वायदा बाबा आज तक भी साकार माध्यम द्वारा अव्यक्त रूप में सभी बच्चों से मिलन मनाते, वाणी चलाते और मीठी टोली खिलाते और याद प्यार और नमस्ते करते निभाते चले आ रहे हैं और जब तक हम सम्पन्न नहीं बनेंगे तब तक निभाते ही रहेंगे।

इसी तरह विश्वकल्याणी, वरदानी मूर्त दादी जी से मधुर वार्तालाप करते हुए अथाह खुशी प्राप्त

हुई जिससे मुझे न स्वयं का तथा न समय का भान रहा। अन्त में दिल से यही आवाज़ निकली कि नज़रों से निहाल करने वाली दादीजी को तथा याद प्यार और नमस्ते करने वाले बापदादा को लाख-लाख शुक्रिया···'मैं दादीजी को नमस्ते करते हुए बाबा की झोंपड़ी की ओर चल पड़ा···मेरे नमस्ते का प्रत्युत्तर दादीजी ने नमस्ते के रूप में दिया···जिससे खुशी में झूमता हुआ मेरा मन बार-बार गीत गा रहा था···वाह ड्रामा वाह···वाह रे मैं···वाह मेरा बाबा···मौलाई मस्ती में चलते हुए बाबा की झोंपड़ी में कदम रखते ही बाबा को नमस्ते करके मीठी रूह-रिहान में खो गया···उस प्यार के सागर में समा गया···

○

सोनीपत में नए सेवाकेन्द्र के उद्घाटन अवसर पर मंच पर (बाएं से) भ्राता देवीदास, विधान सभा सदस्य, ब्र० कु० बिमला, ब्र० कु० हृदय मोहिनी जी तथा ब्र० कु० जनक विराजमान हैं।

मिरज मेडीकल कालेज के २२ डाक्टरों का ग्रुप सांगली सेवाकेन्द्र पर आया था। ब्र० कु० सुनिता बहिन राजयोग की व्याख्या करने पश्चात् उन्हें राजयोग का अभ्यास कराते हुए।

मीठे बच्चे,

महानता पाने के लिये ज्ञान की महीनता में जाना पड़ेगा।

आदर्श मित्र कौन ?

ब्र० कु० कस्तूरी, शोलापुर

"मित्रता बड़ा अनमोल रतन,
कब इसे तोल सकता है धन ?"

मित्र जीवन की अमूल्य निधि है। उसके अभाव में जीवन निर्धन, दीन-हीन-सा लगता है। मनुष्य अकेला नहीं रह सकता। वह सदा सच्चा संगी ढूंढता है। सखा खोजता है। संसार में सच्चा साथी (भगवान के सिवाए) दुर्लभ है। भाग्यवान वे हैं जिन्हें आदर्श मित्र मिलते हैं।

आदर्श मित्र ही तारन-नख है, भव-भय-हरण है। उसके संबंध में कहा गया है—

"उत्सवे व्यसने चैव दुर्भिक्षे राष्ट्र विप्लवे,
राजद्वारे श्मशाने च यः तिष्ठति स बांधवः।"

अनुकुल-प्रतिकुल परिस्थितियों में, सुख-दुख में साथ देने वाला ही आदर्श मित्र है। इसीलिए कहा है—

'Friend multiplies our joys and divides our sorrows.'

तुलसी के शब्दों में—

'निज दुःख गिरी सम रज करि जाना।
मित्रक दुःख-रज मेरु समाना॥'

ऐसा मानकर वह अपने मित्र के दुख को दूर करने की भरसक कोशिश करता है।

विश्वासपात्र मित्र जीवन की औषधि है। सभी आधि-व्याधियों से वह हमें मुक्त कर देता है। शंकराचार्य जी ने कहा है कि जो हमें पाप से हटाए वही सच्चा मित्र है। वह हमारे जीवन का आदर्श पथ-प्रदर्शक होता है। 'मधु तिष्ठति जिसवाग्रे, हृदये तु हलाहलम्' वाले आस्तीन के साँप अनेक मिलते हैं। वे मुख पर लल्लों-चप्पों करते हैं। चिकनी चुपड़ी बातें करते हैं। परंतु पीठ पीछे हमारी बदनामी करते हैं। ऐसे ढोंगी दोस्तों से बचना चाहिए।

'Misery is the touchstone of friendship.'

सदा उसे अपना परम मित्र बनाकर साथी बना लो। उसके साथ रहने में या उसे अपने साथ रखने में क्या आनंदित क्षण बीतेंगे—जरा चिंतन करो। भगवान को सच्चा साथी बना लो तो और किसी साथी की आवश्यकता नहीं रहेगी। और जब माया देखेगी कि अरे, इनके साथ तो सर्वशक्तिवान है तो पास आने का साहस भी नहीं करेगी, बल्कि दूर से नमन करके सदा के लिए गमन कर लेगी।

मित्र की सच्ची कसौटी है आपत्ति काल। कवि रहीम ने कहा है—

'कहि रहीम संपत्ति सगे बनत बहुत बहु रीत।
विपत्ति कसौटी जे कसे सोई सांचे मीत।"

तो आप अभी ही सोच लो विश्वासपात्र, आपत्तिकाल में सहयोग देने वाला कौन ? देहधारी मनुष्य या विदेह परमपुरुष ? देहधारी तो विनाशी है। उसकी कोई गैरंटी नहीं कि वह हमें अंत तक साथ दे। तो हमें मित्र या साथी बनाना है एक परमपिता परमात्मा को जो कि अविनाशी, अजर, अमर, सदव का साथी है।

सदा उसे अपना परम मित्र बनाकर साथी बना लो। उसके साथ रहने में या उसे अपने साथ रखने में क्या आनंदित क्षण बीतेंगे—जरा चिंतन करो। भगवान को सच्चा साथी बना लो तो और किसी साथी की आवश्यकता नहीं रहेगी। और जब माया देखेगी कि अरे, इनके साथ तो सर्वशक्तिमान है तो पास आने का साहस भी नहीं करेगी, बल्कि दूर से नमन करके सदा के लिए गमन कर लेगी।

अतः भगवान के साथ रहने की ये हीरे सम घड़ियाँ कहाँ यों ही न बीत जाएँ···पुरुषार्थ की उधेड़बुन की उलझन में कहीं उस परममित्र से किनारा न हो जाए। यदि ये मिलन की घड़ियाँ यों ही बीत गईं तो जरा सोचो फिर पश्चाताप की घड़ियाँ बहुत लम्बी होंगी। लोग तो पूछते हैं कि तुमने भगवान को देखा है ? परंतु उन्हें क्या पता कि हमारे जीवन के ये दिन उसके साथ बीत रहे हैं।

यथा राजा तथा प्रजा

–अन्धविश्वास और विचारहीनता का व्यवहार–

ले०-ब्र० कु० चक्रधारी, दिल्ली

एक समय था जब छोटे-छोटे इलाके के भी अलग-अलग राजा होते थे। वे राजा वहाँ के लोगों के लिए आदर्श होते थे। राजाज्ञा के अतिरिक्त राज-मर्यादा और राजा का चाल-चलन भी लोगों के लिए कानून की तरह का काम करता था। राजा चरित्रवान हो तो प्रजा भी अनुशासन-बद्ध और श्रेष्ठ आचार का लक्ष्य लिये हुए रहती थी। यदि राजा शराबी, विषय-प्रेमी, इन्द्रिय-लोलुप, अन्ध-विश्वासी और विचारहीन हो तो प्रजा भी स्वेच्छाचारी, मिथ्याचारी और विषय-भोगी होती थी। इसलिए कहावत ही बन गई थी कि 'यथा राजा तथा प्रजा'।

उन्हीं दिनों की बात है कि एक छोटे-से भूखण्ड के भूपति बड़े सीधे, अपने विवेक का प्रयोग न कर, सलाहकारों की मत पर चलने वाले और बिना सोचे-समझे झट निर्णय करने वाले थे। न वे बात पर स्वतन्त्र रूप से विचार करते और न किन्हीं नियमों का पालन करते हुए न्याय करते। वे छोटी छोटी महत्त्वहीन बातें भी बड़े-बड़े विद्या-विशारदों और विद्वानों से पूछते और फिर लोगों के कहने में आकर या तो जल्दी खुश हो जाते और या जल्दी नाराज़ हो जाते।

एक बार की बात है कि राजा का एक घोड़ी और गाय ब्याहने वाली थी तो इन्होंने एक सरकारी ज्योतिषी से इस विषय में प्रश्न कर लिया।

राजा ने कहा—"ज्योतिषी महोदय, ज़रा अपनी विद्या के आधार पर बताओ तो कि इन दोनों में से किसको क्या होगा—बछड़ा या बछड़ी ?"

पण्डित जी अपने पोथे खोल कर बैठ गए और स्लेट पैन्सिल लेकर लगे गणित-फलित निकालने। राशि फल भी देख डाला। समय सारिणी के अनुसार ग्रह योग इत्यादि भी देख डाले और फिर अँगुलियों पर गिनती करते हुए मुस्कुराहट से राजा की ओर देखने लगे।

राजा ने कहा—"हाँ, कहिये पण्डित जी, आप की विद्या क्या कहती है ?

ज्योतिषी बोले—"महाराज, ज्योतिष विज्ञान तो यह कहता है कि गाय को बछड़ी पैदा होगी और घोड़ी को बछड़ा। वे थोड़ी-सी व्याख्या करते हुए बोलने लगे—गाय का नाम सन्तोष है, अतः उसकी अमुक राशि है और घोड़ी का नाम दौलती है, इसलिए उसकी अमुक राशि है और इस-इस विधि से उसका यह फल निकलता है।"

इन्हीं दिनों पण्डित जी राजा के आतिथ्य में ठहरे रहे। उन्होंने सोचा कि थोड़े दिनों में अपने ज्योतिष फल से राजा की प्रसन्नता के परिणाम स्वरूप कुछ इनाम लेकर वे वहाँ से जायेंगे।

लगभग ५-७ दिन के बाद जब गाय को बछड़ी और घोड़ी को बछड़ा उत्पन्न हुआ तो राज्य कर्मचारियों में से कुछ ईर्ष्यालु लोगों को डाह का अनुभव हुआ। उन्होंने सोचा कि ज्योतिषी की बात ठीक निकलने के कारण राजा का उसमें विश्वास जुट जाएगा और आगे के लिए राजा उसी से राय

लेगा और इस प्रकार पण्डित जी की गुड्डी ऊँची चढ़ जाएगी। इसीलिए उन्होंने राजा के पास जा कर कहा—"महाराज, पण्डित जी की बात झूठी निकली। क्योंकि घोड़ी को बछड़ी और गाय को बछड़ा पैदा हुआ है जो कि पण्डित जी के भविष्य फल कथन के विपरीत है। महाराज, आप चलकर स्वयं ही देख लीजिए।" (उन्होंने सोचा कि राजा वहाँ चलकर देखने का कष्ट तो लेंगे नहीं)

राजा ने कहा—"मेरे चलकर देखने की जरूरत नहीं। आप लोग पण्डित जी को यहाँ मेरे पास भेज दें और उन्हें बता भी दें कि उनकी बात झूठी निकली।'

चुनाँचे ज्योतिषी जी राज दरबार में ले जाये गए। वहाँ राजा ने उनसे कहा—"पण्डित जी, आपके वचन तो सत्य सिद्ध नहीं हुए। आपकी विद्या, विद्या नहीं, धोखा है। इसलिए इनाम मिलने की बात तो दूर रही, आप स्वयं ही इस देश को छोड़कर किसी दूर देश में जाकर रहें तो अच्छा होगा।"

पण्डित जी ने सोचा कि राजा बात तो गलत कर रहे हैं परन्तु इस समय इनको कुछ कहना ठीक न होगा क्योंकि अभी ये कुछ सुनने की लहर में ही नहीं है। अतः उन्होंने कहा कि जैसे महाराज की आज्ञा होगी, वैसे ही किया जाएगा। परन्तु उन्होंने प्रार्थना करते हुए कहा कि महाराज, केवल इतनी स्वीकृति दीजिए कि मेरे जो कपड़े मैले हो चुके हैं, वे धोबी से धुला लूँ।

राजा ने कहा—"तथास्तु"

पण्डित जी ने अपने कपड़े धोबी को दे दिये। परन्तु धोबी ने ४-५ दिन तक भी कपड़े वापस नहीं किये।

आखिर पण्डित जी ने राज दरबार में जाकर राजा को शिकायत की और कहा—'महाराज, मैं तो जाने के लिए तैयार हूँ लेकिन धोबी ने अभी तक भी कपड़े धो कर वापस नहीं लौटाए। और आज जब मैंने उससे कपड़े माँगे तो उसने कहा—"पानी में आग लग जाने के कारण आपके कपड़े जल गए।"

राजा ने आज्ञा दी—"धोबी को पेश किया जाए।"

धोबी राज-दरबार में हाज़िर हुआ। राजा ने उससे पूछा—"अरे सदना धोबी, तू पण्डित जी के कपड़े क्यों नहीं देता ?"

धोबी बोला—"महाराज, पानी को आग लग गई थी और उसमें पण्डित जी के कपड़े जल गए थे।"

सलाहकारों की ओर से आवाज़ आने लगी कि "क्या पानी को कभी आग लगती है ?"

राजा बोले—"अरे सदना, तू राज-दरबार में झूठ बोलने की हिमाकत करता है। क्या पानी को भी कभी आग लगती है ?"

धोबी बोला—"महाराज, अगर घोड़ी को गाय की बछड़ी पैदा हो सकती है और गाय को घोड़े का बछड़ा पदा हो सकता है तो पानी को क्यों नहीं आग लग सकती।"

यह सुनकर राजा को समझ आया कि उसके सलाहकारों ने उसे ग़लत सूचना दी थी और उनके कहने में आकर उसने पण्डित जी को ग़लत राजाज्ञा दी थी। इस प्रकार उसने न जाने कितने ही ग़लत निर्णय किये होंगे और उससे जनता में कितने ही ग़लत विचार, आचार, व्यवहार और व्यापार फले होंगे। आज उसने 'यथा राजा तथा प्रजा' उक्ति की सत्यता को समझा और उसने दृढ़ निश्चय किया कि वह अन्ध विश्वास नहीं करेगा और सुनी-सुनाई बात पर नहीं चलेगा बल्कि स्वतन्त्र रूप से विचार कर सत्य-असत्य का निर्णय करेगा।

बच्चो, आज हम देखते हैं कि कितने ही लोग हमारी संस्था या किसी अन्य संस्था अथवा व्यक्ति के बारे में भी कई तरह के ईर्ष्यालु लोगों की कही गई बात पर विश्वास कर लेते हैं। वे न स्वयं अपनी आँखों से देखते हैं, न विवेक का प्रयोग करके सत्य-असत्य का निर्णय करते हैं बल्कि प्रजा और

(शेष पृष्ठ २० पर)

मैं विश्व का मूल्यवान-रत्न कैसे बना !

ब्र० कु० विश्व रत्न, माउण्ट आबू

अपनी सादगी और सरलता के लिए प्रख्यात, यज्ञ में चमकते हुए सितारे दादा विश्व रत्न सचमुच ही विश्व के अनमोल रत्न हैं। उनकी प्रथम मुलाकात ही उनके शीतल व्यक्तित्व की ओर आकर्षित करती है। उनका रूहानियत से भरा चेहरा अनेकों को प्रेरणा देता है और उनकी सभी के प्रति शुभ-दृष्टि सबके मन में उनके प्रति सत्कार को जागृत करती है।

दादा जी यज्ञ के प्रारम्भ से ही बाबा के अति समीप रहे। आपने प्रत्येक कदम में बाबा से बहुत कुछ सीखा। आज आपको सम्पूर्ण दैवी परिवार बहुत ऊँची नज़र से निहारता है। दादा जी अपने इस अलौकिक जीवन में कैसे आगे बढ़े—उनके ही भावो में प्रस्तुत उनका कुछ अनुभव··· —सम्पादक

प्रश्न—दादा जी ! आपने इस पथ पर चलने का दृढ़ संकल्प कैसे लिया ?

उत्तर—बात सन् १९३८ की है। मैं कराची में रहता था और इन्टरमीडिएट का विद्यार्थी था। ओम मण्डली हैदराबाद में अपनी धूम मचाए हुए थी। प्रतिदिन अखबारों में उनकी ही चर्चा मुख्य रूप से होती थी···जो कि मेरे गले नहीं उतरती थी मैं सोचता था कि मैं एक बार देखूं···परन्तु वहाँ कैसे जाऊँ···

कुछ ही दिन बाद ओम मण्डली कराची में आ गयी···अब मुझे तीव्र इच्छा हुई कि मैं जाकर देखूं···और एक दिन मुझे बाबा से मिलने का अवसर प्राप्त हो गया। जैसे ही मैंने बाबा को प्रथम बार देखा, उनकी दिव्यता ने अखबारों के समस्त प्रचार को झूठा सावित कर दिया। बस उनके महान दैवतुल्य आकर्षक व्यक्तित्व को देखकर ही मैंने अपने जीवन का अन्तिम निर्णय ले लिया था। मुझे ज्ञान दिया गया जिसमें मुझे प्रथम दिन से ही सम्पूर्ण निश्चय हो गया और इस प्रकार मुझमें त्याग वृत्ति आ गयी, मेरा सिनेमा देखना छूट गया, सम्बन्धियों के पास आना-जाना छूट गया। मैं ईश्वरीय रंग में पूर्णतया रंग चुका था। अब मेरा मन संसार से उठ चुका था, बस लगभग एक वर्ष बाद ही मैंने भी स्वयं को इस रुद्र यज्ञ में स्वाहा कर दिया।

प्रश्न—दादा जी···आप बाबा के समीप कैसे आये ?

उत्तर—कुछ ही समय में मुझे सेवायें दी जाने लगीं। मैं बहुत शान्त रहता था, कभी भी टाइम वेस्ट नहीं करता था। मेरी इन धारणाओं का प्रभाव चारों ओर फैलने लगा जो कि बाबा ने भी सुना।

इसके बाद क्या हुआ कि जो भी कोई नई सेवा होती थी, बाबा मुझे बुलाते और सदा कहते थे—"बच्चू, तुम्हें और ड्यूटी दें ?" और मेरा सदा ही एक ही उत्तर था—"हाँ बाबा।" बस बाबा मुझे सेवायें देते गये, मैं 'हाँ जी'—कहता रहा। इस 'हाँ, जी', ने ही मुझे बाबा के अति समीप लाया और बाबा के विशुद्ध प्रेम का पात्र बनाया···।

प्रश्न—आपको बाबा क्या-क्या कहा करते थे ?···

उत्तर—बाबा सदा ही कहते थे कि यह बच्चा बाबा का वफादार व आज्ञाकारी बच्चा है। मैं यह ध्यान रखता था कि प्रत्येक कार्य पूर्ण रूप से ठीक हो···मैं खरीददारी करने जाता था तो यह ध्यान रखता था कि चीज अच्छी हो, सस्ती हो, सबको पसन्द आये···। बाबा मुझे कहा करते थे—ये मॉनीटर है—बच्चे, कैसे है तुम्हारी सेना ?" बाबा मुझे बहुत ही सम्मान की दृष्टि से देखते थे।

प्रश्न—दादा जी, आपके आगे बढ़ने का रहस्य

क्या है ?

उत्तर—सर्वप्रथम मुझ श्रीमत को हूबहू पालन करने का संकल्प रहता था। जैसे भी बाबा कहे, जो भी बाबा कहे और जिस समय भी बाबा कहे।

दूसरे—सदा यह पुरुषार्थ रहा कि इच्छाओं को समाप्त करना है क्योंकि इच्छायें ही पुरुषार्थ के पथ पर बड़ा विघ्न हैं। जहाँ इच्छायें नहीं, वहाँ विघ्न नहीं।

तीसरे—सदा ही सादगी में तथा त्याग वृत्ति में रहना है।

चौथे—मुझे प्रारम्भ से ही यह संकल्प रहा कि मुझे सम्पन्न बनना है—अतः मेरा प्रत्येक कर्म भी सम्पन्न हो व प्रत्येक संकल्प मुझे सम्पन्नता की ओर आगे बढ़ाये···

और बचपन से आज तक मेरा 'हाँ, जी' का पाठ पक्का है। मैं कभी किसी छोटे बच्चे को भी 'ना' नहीं करता। मैं सोचता था कि मुझे कौन सेवा दे रहा है···और जो सेवा दे रहा है वह उसके साथ बुद्धि व बल भी देता है। उसने मेरे में उम्मीद रखी है तो मुझे उसकी उम्मीदों को पूरा करना ही है।

मुझे मनसा वाचा कमर्णा अपने को पवित्र रखना है।

ये हैं, वे कुछ सार रूप की बातें जो मेरे आगे बढ़ने का आधार बनीं।

प्रश्न—दादा जी, आपने यज्ञ में क्या-क्या सेवायें की ?

उत्तर—बाबा ने मुझे आलराउन्डर बनाया, आरम्भ से ही सब कार्य कराये। पहले मैं साहित्य लिखने का काम करता था, झाड़ (कल्प-वक्ष) व गोले (सृष्टि-चक्र) का चित्र मैंने ही बनाया था। तत्पश्चात् बाबा ने मुझे खरीददारी का काम सौंपा। फिर बच्चों का टीचर बनाया, फिर चप्पलें बनाने का काम व धोबी का काम, नाई का काम कराया—आर्टिस्ट भी बनाया, मुझे बाबा ने पुलिस-मैन बनाकर भी ड्यूटी पर तैनात किया।

मुझे उमंग रहती थी कि बाबा के मुख से जो भी निकले मुझे पूरा करना है। बाबा ने मेरे द्वारा बढ़ई का काम, बिजली का काम भी कराया फिर बाबा ने मुझे बनाया डाक्टर, मैंने किचन में भी सेवायें कीं और···आजकल बाबा ने मुझे एका-उण्टेन्ट बनाया···

इस प्रकार बाबा मुझे सेवायें देते गये, कला भी भरते गये और मैं आगे बढ़ता गया···मैं जीवन में कभी भी किसी से रीस नहीं करता था, यह पाठ पक्का रहा—कि सभी का इस ड्रामा में अपना-अपना पार्ट है। मुझे अपना पार्ट बजाना है।

प्रश्न—दादा जी, १४ वर्ष की भट्ठी में आपने क्या-क्या धारणा अपनाई थीं ?

उत्तर—मैंने बैठकर तो योग तपस्या नहीं की। परन्तु कार्य व्यवहार में ही आत्मिक दृष्टि का बहुत अभ्यास किया। मैं अधिक समय इसी अभ्यास में रहता था।

मैंने जीवन में न्यारापन बहुत अपनाया परन्तु मेरा स्नेह भी सभी के साथ अटूट था···।

मैं लक्ष्य रखता था कि अपने कर्मों से, वचनों से व व्यवहार से सभी को सन्तुष्ट करूँ।

मैं गुप्त पुरुषार्थ करता था। अपना पुरुषार्थ किसी को भी दिखाता नहीं था।

मैं स्वयं को स्वयं ही सेफ़ रखता था। तथा एकान्त में अधिक रहता था।

मुझे ध्यान रहता था कि यज्ञ का कुछ भी खर्च मेरे ऊपर न हो।

सेवाओं के क्षेत्र में सदा ही दूसरों को आगे रखता था और उन्हें रिगार्ड देता था।

कभी भी सेवा के कारण मेरी मुरली मिस होती थी तो मैं ऐसा सोचता था कि मेरा कुछ भी मिस नहीं होगा क्योंकि मैं अलबेलेपन के कारण तो मुरली मिस नहीं करता हूँ। बाबा मुझे भेजता है तो बाबा स्वयं ही सब कुछ देगा और ऐसा ही होता था। मेरे ज्ञान-रत्नों के भण्डार सदा ही भरपूर रहे। मैं सोचता था कि मैं तो बाबा का सपूत बच्चा हूँ, मेरा कुछ भी मिस नहीं होगा।

प्रश्न—दादा जी, वर्तमान समय आपका कैसा

पुरुषार्थ है ?

उत्तर—मैं अमृतवेले एकाग्रता का अच्छा अभ्यास करता हूँ और दिन में भी उसे करते रहने का ख्याल रखता हूँ।

मैं यह भी अभ्यास करता हूँ कि बाबा मेरे साथ बैठे हैं और मुझे देख रहे हैं। बाबा को साथ रखने से यह रहता है कि कभी भी भूल नहीं होगी और बाबा बच्चों का मददगार है तो सदा सफलता होगी।

मुझे तरस बहुत जल्दी आता है और सभी के प्रति शुभ भावना रहती है।

मुझसे कभी भी क्रोध से नहीं बोला जाता।

इस प्रकार बाबा के आज्ञाकारी वत्स बाबा की आशाओं के दीपक दादा विश्व रत्न जी ने अपने उद्‌गार प्रकट किये। दादा जी यज्ञ के अभी भी स्तम्भ माने जाते हैं। उनकी पावन दृष्टि सभी को बाबा की समीपता का अनुभव कराती है।

O

नव रचना का आधार हो तुम

(रिखी किशोर, भिलाई नगर, म० प्र०)

प्रेरणा का एक दिव्य स्रोत,
अरु अनुभव के भण्डार हो तुम;
ब्राह्मणों के जीवन का बिन्दु,
अरु शिव का रूप साकार हो तुम ॥१॥

नन्हे मुन्ने की पालना में,
प्यार दिया माँ बनकर तुम;
हर कार्य में साथ निभाते,
दुलार दिया पिता बनकर तुम ॥२॥

सुख शान्ति प्रेम आनन्द का,
सौम्य चैतन्य मूर्ति हो तुम;
हमें बनाने लिए फरिश्ता,
बने निमित्त आधार हो तुम ॥३॥

प्राण प्यारे शिव बाबा की,
याद दिलाते हर पल तुम;
दृष्टि दे पांछी सा उड़ाते,
स्वयं भो हो जाते हो गुम ॥४॥

अब तो अंग संग हो रहते,
तोड़कर देह बन्धन हो तुम;
बच्चे आओ अव्यक्त वतन में,
सदा यही कहते हो तुम ॥५॥

अब भी रूप साकार में होकर,
देते हमें साकाश हो तुम;
हम पुरुषार्थी बच्चों के,
जीवन पथ का प्रकाश हो तुम ॥६॥

अमृत बेले हमें उठाकर
अपनी गोद बिठाते हो तुम;
अनन्त आकाश में हमें ले जाकर,
अव्यक्ती सैर कराते हो तुम ॥७॥

नव रचना का आधार हो तुम,
मेरे जीवन का शृंगार हो तुम ॥

ज्ञान रत्नों की महादानी- दादी रत्नमोहिनी

इस बेहद के ड्रामा में ज्ञान सागर परमात्मा शिव की अनेक लीलाएँ साकार ब्रह्मा द्वारा देखने वाली रत्न-मोहिनी ज्ञान रत्नों की भण्डार, अनेक आत्माओं को भरपूर करती है। अपने योगी जीवन के अनुभवों से मनुष्यात्माओं से परम शान्ति तथा शीतलता का अनुभव करती है। हजारों आत्माओं का बुद्धियोग, सर्वशक्तिवान परमात्मा से सरलता से जुड़ा देती है। वर्तमान समय आप ईश्वरीय विश्व विद्यालय के मुख्यालय में प्रमुख जिम्मेदारियों को सम्भालते हुए तथा राजस्थान जोन की निर्देशिका के रूप में कार्यरत हैं। इस प्रकार सर्वोत्तम ईश्वरीय सेवा व तपस्या में रत दादीजी के अनुभव उन्हीं के भावों में प्रस्तुत हैं।

—सम्पादक

मेरा जन्म सन् १९२५ में हैदराबाद सिन्ध के एक सम्पन्न धार्मिक परिवार में हुआ। माता-पिता के भक्ति के संस्कार के प्रभाव से बचपन से ही मुझे भक्ति पूजा का शौक था। जब मैं १० वर्ष की थी तो अचानक मेरे लौकिक बाप का देहान्त हुआ, जिससे माताजी अत्यन्त दुखी थीं। घर में अशान्त वातावरण व्यापक था।

साक्षात्कार द्वारा दिव्य जन्म

एक दिन दीदी मनमोहिनी जी की लौकिक माँ क्वीन मदर जो मेरी चाची लगती थी, हमारे घर माताजी को मिलने आयीं। तो माताजी के दुखी और अशान्त जीवन को देखकर क्वीन मदर ने कहा कि यहाँ पड़ोस में दादा के घर बहुत अच्छा सत्संग चलता है। वहाँ जो जाता है, दुनिया के सब दुख भूल जाता है। क्वीन मदर के आग्रह से हम दूसरे ही दिन मैं और मेरी लौकिक माताजी दादा के घर सत्संग करने गईं। वहाँ जाते ही जब मैंने पहली बार दादा अर्थात् ब्रह्मा बाबा को देखा मुझे बाबा का शरीर गुम होकर वहाँ विष्णु का साक्षात्कार हुआ। मुझे लगा कि शायद मैं स्वप्न तो नहीं देख रही हूँ, लेकिन वो स्वप्न नहीं था वास्तव में बाबा साक्षात् विष्णु स्वरूप दिखाई देते थे। उसी समय से मेरा झुकाव ओममंडली की तरफ हुआ।

मेरी लगन निशिदिन चढ़ती कला में थी। मैं लौकिक पढ़ाई छोड़ना चाहती थी लेकिन बड़े भाई की तीव्र इच्छा थी कि पढ़ाई में आगे बढ़कर कोई अच्छी डिग्री प्राप्त करूं। सत्संग में रुची बढ़ने के कारण मैंने नवीं कक्षा की परीक्षा के बाद ज़िद् की, कि मुझे पढ़ना ही नहीं है। फिर भी मेरे भाई ने बनारस युनिवर्सिटी में प्रवेश लेने के लिए बहुत प्रयास किया। लेकिन—मुझे प्रवेश नहीं मिला। मैं खुशी में नाचती थी कि सचमुच मुझे ईश्वर ने मदद की। वैसे मैं पढ़ाई में बहुत होशियार थी जिससे सदा क्लास में मेरा नम्बर आगे रहता था। मुझे अनुभव हो रहा था कि मैं अभी लौकिक घर की नहीं रही, लेकिन मैं ईश्वर की ही हो गई। कुछ ही समय बाद मैंने अपना जीवन ईश्वरीय सेवार्थ अर्पित कर दिया और आजीवन ब्रह्मचर्य पालन का दृढ़ संकल्प लिया और मैं समर्पित जीवन बिताने लगी।

बाबा ने हमें शिक्षाओं से सजाया

बाबा हम छोटे बच्चों को हर बात बड़े प्यार से सिखाते थे। मुझे याद है कि गलती होने पर भी बाबा ने हमें कभी भी नहीं डाँटा और भी प्यार के सागर बाप ने हमें बड़े प्यार से राजकुमारी की तरह पालना दी। शिक्षाएँ भी बहुत प्यार से समझाते थे। जिन्हें हम सहर्ष स्वीकार करते थे। मैं सदा अपने पर ध्यान रखती थी कि मुझसे कभी भी ऐसी गलती न हो जो बाबा को पसंद न हो। यज्ञ की हर प्रकार की सेवा बाबा स्वयं खुद करके हमें सिखाते थे। बाबा को देखकर हम भी चाहे कर्मणा, चाहे वाचा, छोटी-बड़ी सेवा बड़े प्यार से करते थे क्योंकि मेरा सदा लक्ष्य रहता था कि मुझे इस बेहद के अविनाशी रुद्र गीता ज्ञान यज्ञ में सम्पूर्णतया स्वाहा होना है।

ज्ञान सागर से मोती चुगना

बाबा प्रातः क्लास में जब मुरली सुनाते थे तो मैं चात्रक की तरह एक एक ज्ञान रत्न बुद्धि रूपी झोली में जमा करती थी। जब यज्ञ सेवा से निवृत्त होती थी तो बगीचे में एकान्तवासी बनकर ज्ञान रत्नों की गहराई में जाकर मनन का आनन्द लेती थी। उस मनन के आनन्द से मग्न अवस्था अनुभव करके बाबा की याद रूपी झूले में झूलती थी। मनन करने से मेरी ज्ञान में रूचि बढ़ती गई। कई बार मनन करने के बाद लिखकर बाबा को बताती थी तो बाबा कहते थे—"रत्न बच्ची, तू तो है ही रत्नों की खान"।

कठिन तपस्या

हम आत्माओं को शक्तियों से तथा गुणों से सम्पन्न बनाने के लक्ष्य से खास वतन से शिव बाबा ने तपस्या अर्थात् भट्ठी का प्रोग्राम भेजा। भट्ठी में हम दिन-रात योगाभ्यास करते थे। कभी-कभी ४-४ या ८-८ घंटे भी तपस्या करते थे जिसमें फरिश्तेपन की स्थिति का तथा शक्तिशाली स्थिति का अनुभव होता था। मैं वो ही शक्ति हूँ जिसकी मन्दिरों में पूजा होती है, ऐसा स्वयं को शक्ति स्वरूप अनुभव होता था।

बाबा हमें भविष्य में आने वाली घटनाएँ सुनाते थे कि कैसे विनाश होगा, कैसी भयानक परिस्थितियाँ पेपर के रूप में आपके सामने आयेंगी और कैसे उस समय तुम्हें अपनी शक्तिशाली अचल अडोल स्थिति रखनी होगी। हम इस योग की भट्ठी में विशेष मौन भी रखते थे जिससे हमें योगाभ्यास में सुन्दर अनुभूतियाँ होती थीं। भट्ठी में स्वर्गिक जीवन के अनोखे दृश्य भी दिखाई देते थे जिससे बुद्धियोग पुरानी दुनिया से स्वतः ही हटता था। वही कठिन तपस्या जो बाबा ने १४ वर्ष के कालावधि में कराई, जीवन में मददगार बन गई। उससे योग हमें अति सरल अनुभव होता है।

तुम शक्ति अवतार हो

बाबा हमें योगाभ्यास कराते समय अपनी शक्तियों की पहचान देते थे। बाबा कहते थे "तुम शिव शक्तियाँ हो···तुम शिव शक्ति अवतार हो··· तुम्हारे में असीम शक्तियाँ हैं···तुम ही असुर संहारी दुर्गा देवियाँ हो···तुम्हें इस कलियुगी पतित मनुष्यों के आसुरी वृत्तियों का संहार करना है और विश्व में नई क्रान्ति लानी है···ऐसे शक्तिशाली महावाक्य-उच्चारण कर विभिन्न शक्तियों का अनुभव कराके शक्तिशाली शक्तियाँ बनाया। कभी हम समुद्र के किनारे एकान्त में जाकर रेत के ढेर पर जाकर बैठते थे। स्वयं को विश्व के मालिक या बेहद के मालिक समझ इस पुरानी सृष्टि को हमें ही स्वर्ग बनाना है, ऐसी रूहानी मस्ती में लम्बे समय तक बैठते थे।

सन् १९५० में भारत के विभाजन के बाद हम सभी भाई बहनें भारत में आये। बाद में सन् १९५२ से हमें बाबा ने अन्य आत्माओं का जीवन दिव्य बनाने की सेवा के लिए भारत के अन्य स्थानों पर जाने के लिए प्रोत्साहित किया।

बाबा ने हमें ज्ञान रत्नों का दान करना सिखाया

बाबा सदैव कहते थे, बच्चे, ये एक एक ज्ञान रत्न अमूल्य है। जो इसे धारण करेगा वो कौड़ी से हीरे तुल्य बनता है। जितना तुम महादानी बनकर अनेकों को ये खजाना बाँटोगे उतना ही ये

वृद्धि को पायेगा और अनेकों की दुवाएँ तुम्हें आगे बढ़ायेंगी। ऐसा समझाते हुए बाबा हमें कैसे विभिन्न सफलतापूर्वक सेवा करें इसकी विशेष ट्रेनिंग देते। भारत में विशेष मुझे दिल्ली, इलाहाबाद, कलकत्ता, पटना इत्यादि स्थानों पर बड़े-बड़े सम्मेलनों, प्रदर्शनियों, मेलों आदि कार्यक्रमों का आयोजन करने की सेवा का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

बेगरी पार्ट ने निश्चय की नींव मजबूत की

सदा हर परिस्थिति में हमारा निश्चय मजबूत रहने के लिए बाबा हमें प्रेरणा देते थे। अत: बेगरी पार्ट के मध्यस्थ हमें ऐसा कुछ अजीब-सा नहीं लगा क्योंकि बाबा स्वयं हमारे साथ थे। वह समय भी बाबा की छत्रछाया में सुखपूर्वक ही बीत गया। बाबा हम बच्चों को सदा सुखी रखते थे ताकि किसी भी परिस्थिति का हम बच्चों पर प्रभाव न पड़े। जिस समय हम पाकिस्तान से हिन्दुस्तान आये तो कुछ समय बाद एकानामी का काल चला परन्तु बाबा हम बच्चों को ऐसे खिलाते पिलाते रहे जिससे हमें बेगरी पार्ट का पता भी नहीं चला। बाबा के चेहरे पर कभी भी चिन्ता नहीं दिखाई दी। इतने ३५० मेरे बच्चों को आर्थिक अभाव होने पर भी कैसे खिलाऊँ—यह बाबा ने सोचा ही नहीं। एक ही निश्चय पर ब्रह्मा बाबा अटल रहे कि यज्ञ शिव बाबा का है, आपे ही वो अपने बच्चों को सम्भालेगा।

वास्तव में तो यह बेगरी पार्ट नहीं था, बल्कि हम शक्तियों को बलवान बनाने का साधन था। उससे हम अधिक शक्तिशाली बने। हमें कभी भी ख्याल नहीं चला कि अब क्या होगा !

विदेश में सेवा की धूम

सन् १९५४ में, मैं दादी जी और आनन्द किशोर दादा, तीनों जापान में होने वाले "विश्व शान्ति सम्मेलन" में निमंत्रण पर सेवार्थ गये थे। बाद में वहाँ कई भारतवासी भाई बहनों को शिव बाबा का सन्देश देकर धूमधाम से सेवा की। सेवा की सराहना करते हुए एक संस्था ने २००० कल्पवृक्ष के सुन्दर चित्र छपवाकर दिये थे। जो हमने भारत सेवार्थ लाये थे। जापान से हम हाँगकाँग, सिंगापुर और पेनान में निमंत्रण पर गये। वहाँ भी बाबा का संदेश देकर हजारों आत्माओं की सेवा की। जब हम विदेश सेवा से भारत वापस आये तो बाबा ने बड़े प्यार से, बहुत ही उमंग उल्लास से स्वागत किया था। बाद में सन् १९७२ से १९७४ तक मैं लण्डन सेवा केन्द्र की संचालिका रही। अभी मधुवन तपोभूमि पर बाबा की सेवा में उपस्थित हूँ।

इस प्रकार हमारी जीवन की यात्रा ईश्वर की छत्रछाया में व्यतीत हुई। हमें अपने भाग्य को निहार कर हर्ष होता है कि हमारे भक्तिकाल में किये गये पुण्य कर्मों का हमें यही प्रत्यक्ष फल मिला कि हम इस अन्तिम जन्म में भगवान के साथ रहे। उसकी श्रेष्ठ पालना में पले, उसकी ही मार्गदर्शना में हमारा जीवन आगे बढ़ा। और निशिदिन उन्हीं की ही प्रेरणाओं अनुसार उन्नति को पा रहे हैं। अब तो मन में यही शुभकामना है कि जल्दी से जल्दी अपनी सम्पन्न स्थिति को प्राप्त करके धरती पर आये भगवान को प्रत्यक्ष करें ताकि अन्धकार में भटकती हुई करोड़ों आत्माएँ अपने प्राण प्यारे प्रभु से मिल सकें। □

(पृष्ठ १४ का शेष)

राजा, जनता और सरकार प्राय: सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास कर लेती है ! इस संस्था के इतिहास के प्रारम्भ से ही ऐसा होता चला आया है। जैसे राजा ने स्वयं जाकर ये देखने का पुरुषार्थ नहीं किया कि गाय और घोड़ी को क्या सन्तति हुई है, ऐसे ही लोग स्वयं सम्पर्क में आकर वास्तविकता को जानने की कोशिश ही नहीं करते बल्कि कान भरने वालों के बहकावे में आ जाते हैं। □

"स्मृति दिवस"---उपरामता का प्रेरक

ब्र० कु० सूरज कुमार, माउण्ट आबू

हे इस धरा पर अवतरित पावन आत्माओं, विश्व की कोटि-कोटि आत्माएँ तुम्हारी शीतल लहरों की कामना कर रही हैं, तुम्हें असंख्य आत्माओं को ईश्वर का दिव्य दर्शन कराकर तृप्त करना है। १६ वर्ष पूरे हो गये, अव्यक्त पालना भी पूर्ण होने को है अब १६ कला सम्पूर्ण होकर, सम्पूर्ण चन्द्रमा की तरह जग में शीतल चाँदनी बिखेरनी है। तो आओ हम सभी मिलकर इस स्मृति दिवस पर पूर्णतया उपराम होने का संकल्प लें ताकि समस्त विश्व हम धरती के फरिश्तों को प्रत्यक्ष देख सके।

प्रति वर्ष, ज्यों-ज्यों जनवरी का महीना समीप आता है, मन में उपरामता की लहरें उठने लगती हैं। यादें ताज़ा होने लगतीं कि इसी मास १८ जनवरी १९६९ को सृष्टि चक्र में सर्व प्रथम सृष्टि की सर्वश्रेष्ठ आत्मा ने परम पद को प्राप्त किया अर्थात् सृष्टि के आदि पिता प्रजापिता ब्रह्मा ने अपनी लम्बी यात्रा पूर्ण की। कलियुग के विकराल काल में, पूर्णतया उपराम होकर उन्होंने सम्पूर्ण स्थिति को प्राप्त किया, उनकी ३३ वर्ष की योग तपस्या सम्पन्न हुई।

मन की ये तरंगें यहीं समाप्त नहीं हो जातीं। वे, जो उस परम पुनीत महान आत्मा के साथ रहे, उनकी महानताओं की यादों में एक बार फिर उन जैसा शीघ्रातिशीघ्र बन जाने का दृढ़ संकल्प करते हैं। कोई उनके रूहानी आकर्षण की याद में मग्न हो जाता है···तो कोई उनके विशुद्ध-स्नेह को मन में छुपाये नयनों को अश्रुमोतियों से भरे रखता है··· कोई अपने श्रेष्ठ भाग्य की पुनः-पुनः सराहना करके आनन्दित होता है कि हमारा ये जीवन उन्हीं की छत्रछाया में बीता···तो कोई यह याद करके गम्भीर हो जाता है कि काश ! हमारा भी ये जीवन उनके ही साथ बीता होता, काश ! हमारी पीठ पर भी उनके पितृवत हस्त पड़े होते, काश···हमने भी सम्मुख उनके मुख से एक बार 'मीठे बच्चे' सुना होता।

परन्तु उनकी याद भी वही रस देती है··· उनकी आज्ञाओं पर चलने से भी वही सुख प्राप्त होता है···उनके श्रेष्ठ कर्मों का अनुसरण करने से भी वही प्यार मिलता है···और उनकी वाणी को हृदयगम करने से भी वही आनन्द प्राप्त होता है। १८ जनवरी का ये दिवस हमारी गति को तीव्र करता है और मन की गति को धीमा करता है।

अब जबकि समय अन्तिम घण्टी बजा रहा है, समय का अन्तिम खेल प्रत्यक्ष दृष्टि गोचर हो रहा है, तो आओ हम सभी इस पावन स्मृति दिवस पर सम्पूर्ण उपरामता से आत्मा का शृंगार करें··· अनेक जीवन लिप्तता में बीत गये, निर्लिप्तता केवल सिद्धान्त ही बना रहा। परन्तु अब इस अन्तिम काल में कर्म क्षेत्र पर उपरामता को धारण करके ब्रह्मा बाबा के समान हम भी अपनी अन्तिम स्थिति को प्राप्त करें। यही स्मृति दिवस का श्रेष्ठ वरदान है।

उपरामता का बीज है वैराग्य

जब तक मनुष्य के मन में वैराग्य न हो, वह उपराम नहीं हो सकता। और वैराग्य कब आता है ? जब मनुष्य को उसका अन्तिम समय समीप नज़र आता है। यदि किसी को यह विश्वास दिला दिया जाए कि तुम्हें २० वर्ष और जीना है तो वह वरागी नहीं बन सकता और यदि उसे यह निश्चय हो जाए कि उसके अन्तिम क्षण ६ मास से अधिक नहीं हैं तो फिर देखो उसका वैराग्य···उसे कुछ भा

अच्छा नहीं लगेगा।

परमात्मा ही मनुष्य को सम्पूर्णता का पथ दर्शा सकता है। वह ही आत्माओं को सम्पूर्ण बनने का बल भी देता है। तो अब जबकि स्वयं परमात्मा ने आकर हमें याद दिलाया कि तुम्हारी ५००० वर्ष की यात्रा पूरी होने को है, अब घर चलने की तैयारी करो, तो इस स्मृति ने ही हमें वैराग्य धारण कराया और उपराम बनाया। जिसे यह याद नहीं रहता कि अब वापिस चलना है, वह कभी भी उपराम नहीं हो सकता। और बिना उपरामता के सम्पूर्णता की मंज़िल बहुत दूर दिखाई देगी।

अत: समय की समाप्ति को देखते हुए हम वैराग्य वृत्ति धारण करें ताकि देह विसर्जन से पूर्व ही हम देह से न्यारी स्थिति में स्थित हो जाएँ और देह त्याग करते हुए हमें अलौकिक सुख की अनुभूति हो और जब तक हम इस देह रूपी कुटिया में बैठे हैं, हमारे दिन दुखों के अनुभव से परे ईश्वरीय रस ग्रहण करते हुए बीतें।

उपरामता क्या है ?

उपराम अर्थात् कर्म करते हुए, संसार में विचरते हुए उसके प्रभाव व आसक्तियों से परे रहना। परन्तु परे कहाँ ? **ऊपर अपने ब्रह्मलोक घर में आराम करना अर्थात् ऊपर घर में सदा अपने परमपिता के साथ आराम से रहना ही उपराम होना है।** यह उपराम स्थिति सूनी स्थिति नहीं है। क्योंकि इसमें आत्मा अपने घर शान्ति धाम में निवास करती है, जिसे अंग्रेज़ी में स्वीट साइलैन्स होम (Sweet Silence Home) कहा जाता है तो आत्मा वहाँ की स्वीट साइलैन्स (मीठी शान्ति) के अनुभव में रहती है। और क्योंकि आत्मा अपने प्रियतम परमात्मा के साथ निवास करती है, अत: उसे अकेलापन नहीं बल्कि सर्व रसों से युक्त जीवन का अनुभव रहता है। यह उपराम स्थिति वो स्थिति है जिसमें आत्मा इस विश्व में विचरते हुए भी मानो यहाँ नहीं रहती···ये उपराम स्थिति वो स्थिति है, जिसमें आत्मा मानो खाते हुए भी नहीं खाती, कर्म करते हुए भी अकर्म की श्रेष्ठ स्थिति में रहती है, ऐसी सुन्दर स्थिति पर हमें शीघ्र ही पहुँचना है।

उपरामता, पलायन-वृत्ति नहीं है। एक तो वो स्थिति होती है जबकि हम कर्म से किनारा कर लेते हैं, मानो कर्म का सन्यास कर लेते हैं—ये पलायनता है, उपरामता नहीं। उपरामता अर्थात् कर्म करते हुए उसके प्रभाव से परे रहना। कर्म छोड़ने से कर्मातीत स्थिति प्राप्त नहीं होती। कर्म-सन्यास मनुष्य को निष्क्रिय बना सकता है, उसका बौद्धिक विकास भी रुक सकता है। परन्तु उपरामता जीवन को दिव्य बनाती है, कर्मों को महान बनाती है और दूसरों को सिखाती है कि विश्व में रहते हुए भी उसके बन्धनों से मुक्त कैसे रहें।

अब घर जाने का समय है

यह स्मृति मनुष्य को उपराम कर देती है। जिस मनुष्य को यह ज्ञात है कि अब सब कुछ समाप्त होगा···जो कुछ दिखाई दे रहा है वह नहीं रहेगा, कोई भी किसी का साथ नहीं दे सकेगा··· जिन्हें हम अपने कहते हैं वे भी नष्ट हो जाऐंगे··· सभी सांसारिक प्राप्तियाँ छट जाएंगी, तो वह मनुष्य एकान्त में बैठकर अवश्य चिन्तन करता है कि फिर ये सब भाग दौड़ क्यूँ ! फिर ये ममत्व क्यूँ !! फिर ये बन्धन क्यूँ···और इस प्रकार ज्ञान-युक्त हुई वह आत्मा स्वयं को उपराम करके ईश्वरीय सुखों में रमण करने लगती है।

तो उपराम स्थिति को धारण करने की इच्छुक आत्माओं को प्रतिदिन क्षण भर के लिए अपने उन अन्तिम क्षणों को याद करना चाहिए जब उन्हें सब कुछ छोड़कर वापिस चलना होगा, तब पश्चाताप न हो, सब कुछ विनाश होते हुए देखकर भी दुख न हो, उदासी न हो, चारों ओर हाहाकार के करुण क्रन्दन मन को विचलित न करें, किसी का भी मोह हमें अपनी ओर आकर्षित न करे, ऐसा चिन्तन उपराम स्थिति धारण करने में पूर्ण सहयोगी होगा।

समर्पणता उपरामता लाती है

हम आत्माएँ अपना सर्वस्व अपने परमपिता को दे चुकी हैं। ये तन, ये मन, ये धन, अब हमारा नहीं है। हम वायदा कर चुके हैं कि शिव बाबा हम तुम्हारे हैं और तुम हमारे हो, तो ये दैहिक सम्बन्ध अब हमारे नहीं रहे···ये मेरापन अब समाप्त हुआ···हम संकल्प कर चुके कि अब हम तुम्हारी सेवा के लिए हैं···हम बच्चे हैं और हमारी अँगुली तुम्हारे हाथ में है तो हमारे सभी बोझ समाप्त हुए। "सब कुछ तेरा"—यह कहते ही हम सब बन्धनों से मुक्त हुए।

जब कोई वस्तु किसी को दे दी जाती है फिर उसके बारे में कोई संकल्प नहीं उठना चाहिए। फिर लेने वाले का पूर्ण अधिकार है कि वह जैसा चाहे उसका प्रयोग करे। जैसे हमारे परमप्रिय शिव बाबा जब स्वर्ग का राज्य भाग्य हमें सौंप देते हैं तो फिर कुछ भी संकल्प नहीं करते। वहाँ आने का भी संकल्प नहीं करते। निर्संकल्प होकर घर में बैठ जाते हैं। तो हम भी जबकि सब कुछ दे चुके, फिर उसका संकल्प या चिन्ता क्यों···

देह व देह के सम्बन्धों से उपराम

हम इस देह को भी प्रभु को दे चुके तो अब तो हमें इस देह में मेहमान की न्याई रहना है··· देह का दान करके उसमें आसक्ति रखना या उसे अपना समझना—यह तो सूक्ष्म पाप है। देह का दान करके, वैरागी जीवन बनाकर फिर समय का अधिकांश भाग खाने-पीने, देह सँवारने में ही व्यतीत कर देना, समझदारी नहीं है। तो इस प्रकार मुझ आत्मा को यह देह प्रभु की अमानत के रूप में मिली हुई है—यह समझने से सुन्दर उपराम स्थिति का अनुभव होगा। फिर देह का रोग-शोक मन को प्रभावित नहीं करेगा। देह के शृंगार की ओर बुद्धि नहीं खिचेगी और देह की स्मृतियाँ नष्ट हो जाएंगी।

और इस प्रकार स्वयं की देह को किराये का मकान महसूस करने से, "मेरे सम्बन्धी" यह नशा ढीला हो जाएगा। मेरा सम्बन्धी तो एक परमात्मा है। और ये सब परिवार के सदस्य मेरे नहीं परमात्मा के सम्बन्धी हैं। वही इनका रक्षक है और वही इनका पालन हार···यह मेरा परिवार नहीं, परमपिता का परिवार है। इस प्रकार के विचारों से आसक्तियाँ समाप्त हो जाएंगी।

ईश्वरीय सेवा में उपरामता

सेवा ईश्वर की है···विश्व परिवर्तन उसका ही कार्य है। उसने हमें सेवा के लिए निमित्त बनाया है ताकि हमसे मेरा-पन दूर हो। अतः दूसरों को ज्ञान देते हुए उस आत्मा के लिए शुभ-भावना तो रखनी ही चाहिए परन्तु उसमें आसक्ति नहीं होनी चाहिए अथवा उसके पीछे भागना नहीं चाहिए। शुभ-भावना से ज्ञान देना मात्र हमारा कर्त्तव्य है और फिर सब कुछ निर्भर है उसके भाग्य पर।

सेवा करते करते, जिम्मेदारी निभाते हुए कई बार मनुष्य उसमें आसक्त हो जाता है। उसे ही सब कुछ मान बैठता है जबकि ये आसक्ति हमारी ध्येय प्राप्ति में बाधक है। अतः सेवा को अपनी उन्नति का निमित्त साधन समझते हुए उसमें उपराम रहना है। यदि सेवा से आत्म-उन्नति नहीं होती तो उसका कारण सेवा में आसक्त भाव का होना है।

सेवा हम ऐसे करें, मानो सब कुछ करनकरावनहार कर रहा है। सब कुछ उसी की शक्तियों द्वारा ही हो रहा है। और तत्पश्चात् सेवा के परिणाम को भी उसके ही अर्पण कर दें। ऐसा करने से सेवा आत्मा को सम्पूर्ण बनने में सम्पूर्ण सहायक सिद्ध होगी।

इसी प्रकार खाते-पीते अर्थात् भौतिक साधनों का उपभोग करते हुए भी अति उपराम वृत्ति में रहना है। ये खाना-पीना-पहनना व रहना अति साधारण साधन हैं—ये हमारी साधना को भंग न करें। हमारा मन इन्हीं छोटी-छोटी आवश्यकताओं में ही न भकटता रहे। इनमें मन का लगाव होना, निम्न विचारों का प्रतीक है। हमें तो विशाल बुद्धि

बनना है। अतः जो भी साधन जिसके पास हों, उसका उपयोग अवश्य करें, परन्तु उपराम वृत्ति के साथ। विनाशी चीज़ों को अविनाशी आत्मा का साथी न बना लें। विनाशी वस्तुओं के कारण अविनाशी आत्मा की स्थिति को भंग न करें।

बच्चों की पालना करते हुए, व्यवसाय करते हुए भी यदि उपराम वृत्ति होगी तो ये सब बन्धन नहीं लगेगा। बच्चों को प्यार देना या धन कमाना हमारा कर्त्तव्य है, उसमें आसक्त नहीं होना है।

स्नेह वृत्ति व उपराम वृत्ति का सन्तुलन

उपरामता शुष्कता नहीं है। उपरामता में स्नेह मानो सोने में सुहागा है। स्नेह रहित उपरामता दूसरों को आकर्षित नहीं करती और उपरामता रहित स्नेह विशुद्ध स्नेह नहीं है। हम क्योंकि परिवार में रहते हैं इसलिए सभी के साथ पूर्ण स्नेहपूर्वक भी रहना है और उनसे अप्रभावित भी रहना है।

इसी प्रकार किसी से भी नाराज होकर किनारा करना या न्यारा हो जाना भी उपराम वृत्ति नहीं है। इस न्यारेपन में तो घृणा का समावेश रहता है, परन्तु उपरामता तो बहुत ही उच्च कोटि की वह दिव्य स्थिति है जिसमें विशुद्ध स्नेह समाया होता है, इसमें किसी भी प्रकार की घृणा या द्वेष को स्थान नहीं है।

हे इस धरा पर अवतरित पावन आत्माओं, विश्व की कोटि कोटि आत्माएँ तुम्हारी शीतल लहरों की कामना कर रही हैं, तुम्हें असंख्य आत्माओं को ईश्वर का दिव्य दर्शन कराकर तृप्त करना है। १६ वर्ष पूरे हो गये, अव्यक्त पालना भी पूर्ण होने को है अब १६ कला सम्पूर्ण होकर, सम्पूर्ण चन्द्रमा की तरह जग में शीतल चाँदनी बिखेरनी है तो आओ हम सभी मिलकर इस स्मृति दिवस पर पूर्णतया उपराम होने का संकल्प लें ताकि समस्त विश्व हम धरती के फरिश्तों को प्रत्यक्ष देख सके। □

साकार देखा है

ब्र० कु० प्रकाश, भोपाल

ब्रह्मा के तन में शिव का अवतार देखा है,
साक्षात्कार की बात नहीं साकार देखा है।

कल्प के अन्त में दुखी ये सब प्राणी,
आकर बाबा ने वर्षायी, यह अमृतवाणी।

खुशियों का लुटाते उन्हें अम्बार देखा है,
साक्षात्कार की बात नहीं साकार देखा है।

खद को भुला ये जग, और खुदा भुलाया,
सच्चा परिचय देने शिवबाबा है आया।

बांटते ज्ञान रत्नों का, उनको भण्डार देखा है,
साक्षात्कार की बात नहीं साकार देखा है।

मांगती है दुनिया जिससे भीख प्यार की,
चाहती है झलक बस एक बार की।

हमने तो खुद करके उनसे प्यार देखा है,
साक्षात्कार की बात नहीं साकार देखा है।

कितनी सदियों से भटकी है यह दुनिया सारी,
लुट गयी पवित्रता सुख शांति सारी।

करते स्थापना फिर से सतयुगी संसार देखा है,
साक्षात्कार की बात नहीं साकार देखा है।

जपते रहे मालायें वो गुफाओं में,
तपते रहे वो अग्नि ज्वालाओं में।

पल भर में मिलती मुक्ति-जीवनमुक्ति,
ऐसा किसी ने चमत्कार देखा है?
साक्षात्कार की बात नहीं साकार देखा है।

★

बाबा ने मुझे शेरनी बनाया

ब्र० कु० दादी चन्द्रमणी, माउण्ट आबू

जब अनेक दैवी कुल की आत्माओं से भरे जहाज ने इस विषय सागर को पार करने के लिए कूच किया तो सर्व शक्तिवान ने उसकी बागडोर सर्वप्रथम प्रजापिता ब्रह्मा के हाथों में सौंपी। जिन्होंने सम्पूर्ण सफलता के साथ शिव-शक्तियों से भरी उस विशाल नौका को अनेक तूफानों के बीच से खेकर बहुत दूर ला खड़ा किया था, और जो अब तीव्रगति से अपनी मंज़िल की ओर बढ़ रही है। तूफान उस नौका को गति दे रहे हैं।

उस यज्ञ-पिता के साथ जो अन्य कई होवनहार चमकते सितारे थे, उनमें से एक थी दादी चन्द्रमणी···जिनकी, चन्द्र सी चन्द्रिका की शीतल लहरों से जग शीतलता पा रहा है। जो आज तक अनेकों के समक्ष आदर्श रहीं और जिन्हें देखकर ही अनेक कन्याओं ने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। दादी जी 'शेरे पंजाब' के नाम से ईश्वरीय परिवार में प्रख्यात हैं। वर्तमान समय आप इस महानतम् ईश्वरीय विश्व विद्यालय की सहायक मुख्य प्रशासिका हैं। यहां पर उन्हीं के भावों में उनका संक्षिप्त अनुभव प्रस्तुत है।

—सम्पादक

प्रश्न—दादी जी···जब आप ज्ञान में आईं। उस समय का अनुभव सुनाइये।

उत्तर—मेरा जन्म १९२३ में हैदराबाद (सिन्ध) में हुआ था। परिवार सम्पन्न था और सभी व्यसनों में लिप्त था···परन्तु मैं सांसारिक बहाव से बहुत दूर थी। मैं धार्मिक पुस्तकें पढ़ती थी, व्रत रखती थी और पूजा करती थी। रात्री में सोने के समय मेरे मन में आता था, "हे प्रभू, तुम मात-पिता हम बालक तेरे"। अचानक ही लौकिक परिवार में घटी एक घटना ने हमें प्रभु का बना दिया।

ये बात सन् १९३६ की है कि अचानक ही मेरे भाई की मृत्यु हो गई। हम सात बहनें थीं और सभी के स्नेह का पात्र एक ही भाई था। इस घटना से परिवार में मातम छा गया। मेरी माँ तो मानो पागल हो गई। उसने भाई के साथ ही चिता पर चढ़ने की जिद् की। यह सुनकर सारा शहर शोक की लहरों में डूब गया था। उन्हीं दिनों अचानक ही मुझे ब्रह्मा बाबा का, श्रीकृष्ण का तथा विष्णु का साक्षात्कार हुआ। मुझे खुशी भी हुई और शान्ति भी मिली···

उन्हीं दिनों बाबा के सत्संग की चर्चा धीरे-

धीरे फल रही थी। मैंने अपने साक्षात्कार की बातें जब अपनी सखियों को बताईं तो वे मुझे बाबा के पास ले गईं। और बस यही था मेरे अलौकिक जीवन का श्रीगणेश।

वहाँ मैंने देखा—बाबा सामने बठे हैं और कुछ माताएं ध्यान में स्थित हैं। उनके मुख से ये वचन निकल रहे हैं—"विमान में चढ़ो, जल्दी चढ़ो, नहीं तो विमान छूट जाएगा" और मुझे ऐसा आभास हुआ कि मानो मैं भी विमान में बठकर उड़ रही हूँ। फिर जब मैं बाबा से मिली तो बाबा ने कहा, "तुम तो शिव-शक्ति हो"। इस वरदान को सुनकर जैसे कि मैं शक्ति स्वरूप में स्थित हो गई। फिर बाबा ने स्वयं बैठकर चित्रों के माध्यम से ज्ञान-योग की बातें मुझे समझाईं।

मैंने बाबा को अपने लौकिक घर की दुख भरी कहानी सुनाई। वे सुनते ही बाबा पैदल ही हमारे साथ हमारे घर आये। और बाबा ने देखा कि मेरी माँ शोक-व्याकुल हुई, अति पुराने कपड़ों में जमीन पर बैठी हुई है। बाबा भी वहीं बैठ गये और कहा—"बच्ची अब तो श्रीकृष्ण तुम्हारी गोद में आयेगा। तुम शोक क्यों करती हो। यह पुराने वस्त्र उतार दो, जो बीत गया, अब उसका चिन्तन करके शोक में आँसू न बहाओ···आदि आदि"। इस प्रकार बाबा के मिलने से हमारी माँ का दुख कुछ कम हुआ और अगले ही दिन जब वह बाबा के पास सत्संग में गई तो ध्यान में चली गई और उन्होंने देखा कि श्रीकृष्ण उनकी गोद में खेल रहा है। यह दृश्य देखकर उसका अन्तर्मन खिल उठा और उनके शोक के दिन समाप्त हुए। उन्होंने ज्ञान धारण किया और औरों के भी शोक मिटाने लगी।

इसा प्रकार मेरा लौकिक बाप भी ज्ञान की ओर खिचा। परिवार में पुनः खुशहाली छा गई। परन्तु अब मेरा मन घर में नहीं लगता था। मैं चाहती थी कि मैं सदा बाबा के पास ही बैठी रहूँ। जब भी बाबा के पास जाती थी तो ऐसा लगता था कि मानो बाबा का शरीर है ही नहीं और बाबा के चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश नजर आता था।

मेरा बचपन का नाम 'मोतिल' था। जब मैं अपने दादा के साथ आई तो बाबा ने उन्हें कहा—"यह सच्चा मोती है", तुम्हारा लड़का है। चिन्ता मत करो—यह तुम्हारे पूरे कुल का उद्धार करेगी। यह बात सुनकर मेरे दादा की मेरे में बहुत भवाना हो गई थी। और जब मैंने अपने दादा को समर्पित होने की बात कही तो उन्होंने गौरव से उत्तर दिया, "तुम अकेली क्यों, हम सब समर्पित होंगे" और कुछ ही समय बाद हमारा पूरा परिवार इस रुद्र यज्ञ में स्वाह हो गया।

बाबा ने एक बच्चों का स्कूल खोला। मुझे भी टीचर नियुक्त किया। हम छोटे थे, परन्तु बाबा ने हमें सिखाया कि रॉयल जीवन कैसे जिया जाता है, छोटे बच्चों की पालना कैसे की जाती है, आदि आदि···। इस प्रकार हम बच्चों को पढ़ाते भी थे और साथ ही साथ हमारी ट्रेनिंग भी होती थी।

बाबा मुझे कहते थे कि आप अनुचर हो, हनुमान हो। और इस प्रकार बाबा मेरे द्वारा उन बान्धेलियों की सेवा कराते थे जो किसी भी कारण से बाबा के पास ज्ञान रत्न चुगने नहीं आ सकती थीं।

प्रश्न—दादी जी, १४ वर्ष की भट्ठी का कुछ अनुभव सुनाओ ?

उत्तर—प्रारम्भ से ही मेरा ध्यान तपस्या पर अधिक था। मैं चार-चार घण्टे बैठकर योग तपस्या करती थी। बाबा का भी बहुत स्नेह था। इतना ही नहीं, मेरे ऊपर सदा ही बाबा की दृष्टि थी। ऐसा लगता था कि बाबा मुझसे कोई महान कार्य कराना चाहते हैं। सेवा के क्षेत्र में मैं सदा ही मम्मा की एसिसटैन्ट (सहायक) रही। मेरे ऊपर मम्मा के गुणों का तथा उनके जीवन का बहुत प्रभाव था। मैंने मम्मा से बहुत कुछ सीखा। जब हम आबू में आये तो बाबा को छोड़कर जाने का मेरा संकल्प भी नहीं था। कभी ऐसा सोचा भी नहीं था। परन्तु बाबा के असीम स्नेह वश उनको

आज्ञाओं का पालन करना ही पड़ा।

प्रश्न—दादी जी आप कहाँ-कहाँ सेवा में रहीं?

उत्तर—सर्व प्रथम मैं निमन्त्रण पर अजमेर गई और वहाँ से दिल्ली। कुछ समय बाद मैं अमृतसर चली गई। और फिर मेरा पंजाब सेवा का ही मुख्य पार्ट चला। मैं कई वर्ष श्री हरगोविन्द-पुर भी रही और फिर अमृतसर चला गई। कुछ समय पूर्व ही मैं अफ्रीकी देशों में भी सेवार्थ गई।

प्रश्न—बाबा ने आपसे क्या मुख्य सेवा कराई?

उत्तर—करनकरावनहार अपनी सेवाएँ स्वतः ही कराता है। मैं जब हरगोविन्दपुर गई तो ३०-४० कन्याएँ ज्ञान में निकली जिनमें से कई समर्पित हुईं। अमृतसर में जब बाबा आये तो १०० कन्याएँ थीं। बाबा ने देखते ही कहा कि "अमृतसर कन्याओं की भूमि रहेगी"। सेवा के क्षेत्र में अनेक कन्याएँ आईं, वारिस बनीं और बाबा पर समर्पित हुईं, जो सारे देश में आज विशाल सेवाएँ कर रही हैं—यही बाबा की कमाल रही।

प्रश्न—दादी जी···बाबा ने आपको क्या-क्या सिखाया?

उत्तर—इस प्रश्न का उत्तर अति विशाल है। बाबा ने ही हमें सब कुछ बनाया। उन्होंने हमारी हर तरह से पालना की। बाबा ने मुझे **शेरनी शक्ति बनाया**। इस जीवन में अनेक बातें आई होंगी, परन्तु मुझे कभी भी भय नहीं हुआ।

बाबा ने मुझे पवित्रता का बड़ा भारी बल दिया। जिसका स्पष्ट अनुभव हमें सेवाओं में हुआ।

बाबा ने हमारे जीवन से मेरा-मेरा निकाल दिया। मुझे स्पष्ट अनुभूति रहती है कि बाबा सब कुछ कराता जाएगा। मेरी शक्ति अनुसार बाबा मुझे चलाता जायेगा। और हमसे सेवाएँ लेता जाएगा।

बाबा ने हमें दूसरों को रिगार्ड देना भी सिखाया और दूसरों का रिगार्ड बढ़ाना भी।

बाबा ने सिखाया—दूसरों को आगे कैसे बढ़ाना, उन्हें बाबा का वारिस कैसे बनाना।

प्रश्न—दादी जी आपको क्या नशा रहता है?

उत्तर—मुझे नशा रहता है कि मैं आदि रत्न हूँ···मैं विजयी रत्न हूँ···बाबा के अति समीप हूँ। मुझे बहुत खुशी रहती है, किसी भी बात में चिन्ता नहीं रहती। और सदा ही साइलैंस पावर को बढ़ाने का ख्याल रहता है।

मुझे ज्ञान की गुह्यता में जाने का संकल्प रहता है। साथ ही साथ यह भी ध्यान रहता है कि टाइम वेस्ट न हो। मुझे बहुत अधिक उमंग उल्लास रहता है।

आज कल मनमें बहुत उपरामता रहती है। और याद रहता है कि अब हमारी रिटर्न जर्नी (वापसी यात्रा) है। अब जल्दी ही घर चलना है और वास्तव में तो मैं सदा ही तैयार रहती हूँ।

प्रश्न—दादी जी···आपकी सम्पूर्ण ईश्वरीय परिवार के लिए प्रेरणा?

उत्तर—मैं चाहती हूँ कि बाबा का प्रत्येक बच्चा अपने तन, मन, धन को सेवा में लगाकर अपने अखुट भाग्य का निर्माण कर ले। मनसा, वाचा, कर्मणा सभी शुद्ध हो जाएँ ताकि जल्दी ही इस धरा पर स्वर्ग उतर सके।

अब सब स्मृति स्वरूप हो जाएँ। समय समाप्ति की ओर है अतः सभी ब्राह्मण मन में वैराग्य वृत्ति धारण करें। अपना ही वतन, अपना ही घर, अपनी सेवा व अपनी भावी राजधानी सबके नयनों में समाई हो। इनमें अपनापन हो, दुनिया से अपनापन खत्म हो।

सभी महान आत्माएँ अब हद से बेहद की ओर चलें। जैसे राकेट सभी हदों को पार करके अन्त-रिक्ष में चला जाता है, वैसे ही हम आत्माएँ भी अति सूक्ष्म राकेट हैं, अब सभी हदों से पार होकर बेहद में स्थित हो जाएं···।

○

सचित्र समाचार

माउण्ट आबू में हुई डाक्टरों की मीटिंग में ४० डाक्टरों ने भाग लिया। वे ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि तथा अन्य राजयोग शिक्षकाओं के साथ पांडव भवन में

अम्बाला में ब्र० कु० सराज बहन डिप्टी सी० एम० ओ०, एस० के० गुप्ता जी को ईश्वरीय साहित्य भट करती हुई। ↓

जायन्टस क्लब सांगली में प्रवचन करती हुई ब्र० कु० सुनीता ↓

बलसार में डाक्टरों के लिये हुए कार्यक्रम में भ्राता डॉ० किरनभाई वासबाडा स्वागत प्रवचन करते हुए। ↓

ईलकल सेवाकेन्द्र द्वारा आयोजित एक प्रदर्शनी के समाप्ति समारोह पर ब्र० कु० गुरुदेवी मुख्य अतिथि को सौगात देते हुए। ↓

फिरोजपुर शहर में सैशन जज को ब्र० कु० सरमिष्टा आध्यात्मिक संग्रहालय के एक ज्ञान बिन्दु पर व्याख्या करते हुए। ↓

जाजपुर रोड मारवाड़ी धर्मशाला में विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन भ्राता ए०के० दास जी एन० ए० सी० के एक्जीक्यूटीव आफिसर कर रहे हैं। ↓

गारीयाधार (भावनगर) में आयोजित विश्वशान्ति आध्यात्मिक महोत्सव के उद्घाटन समारोह में प्रवचन करते हुए वजुभाई शाह। मंच पर अतीथि गण बैठे हैं। ↓

मोदी नगर में 'राजयोग भवन' का निर्माण किया गया। जहाँ नित्य प्रति सहज राजयोग व ज्ञान की शिक्षा दी जाती है। ↓

अजमेर में चरित्र निर्माण प्रदर्शनी का उद्घाटन 'आधुनिक राजस्थान' के मालिक व प्रधान सम्पादक भ्राता दलीप जैन ने किया, पास ही में ब्र० कु० राधा खड़ी हैं। ↓

नीमच सेवा केन्द्र की ओर से जावद में प्रदर्शनी लगाई गयी जिसका उद्घाटन एस० डी० एम० भ्राता एस० आर० मोहन्ती, सिविल जज भ्राता आर० के० गोस्वामी एवं ब्र० कु० पुष्पा जी द्वारा सम्पन्न हुआ। ↓

विश्व की अप्रतिम प्रतिमूर्ति---बाबा

ब्र० कु० रुकमणि, झाँसी

सचमुच अरावली की इस विशाल मनोहारी शैल शिखाओं के बीच बसे भव्य मधुवन अर्थात मधुर वन से आज सारे विश्व में मधुरता शांति व पवित्रता की अविरल तरंगें अभिसरित एवं प्रकंपित हो रही हैं, यहाँ आने वाला जिज्ञासु हो व प्रेक्षक हर कोई अविस्मरणीय छाप अंकित करके जाता है।

वह यहाँ के हर कृत्य नयनाभिराम व अपलक होकर देखता ही रह जाता, यहां के हर कण से सचेतनता झलकती है। ऐसा प्रतिभासित होता है मानो कोई महानतम पुरुष जिसका हृदय सागर से असीम है वह अपनी लम्बी शैलशिखाओं-सी भुजाएँ फैलाए अपने हर भटके व बिछड़े बच्चे को जन्मों का खोया प्यार उडेल देना चाहता है। शिव बाबा ने ब्रह्मा बाबा को ही साकार माध्यम क्यों बनाया उसका साक्षात्कार मधुबन भूमि कराती है।

"लगता है" जैसे हर जगह से अव्यक्त प्यारा बाबा झाँक रहा है और मीठे बच्चे लाडले बच्चे कहकर पुकार रहा है। वो स्मृतियाँ, वो कृत्य, वो चरित्र हम सब के जीवन में ऐसी एक अमिट छाप छोड़ गये कि तनिक भी यह आभास नहीं होता कि बाबा अव्यक्त हो गये हैं।

यूँ तो संसार में कई बड़े महापुरुष आते जाते रहते, लोग उनकी भी स्मति व यादें मनाते परन्तु साकार बाबा का चरित्र व चित्र स्वयं भगवान का रथ होने के कारण ईश्वरीय कृत्यों व ईश्वरोय गुणों की प्रतिमूर्ति था। जिसे देखकर बार-बार उस प्रियतम प्रभु की याद आती है, वह इन नयनों में बस जाता है। साकार में जिन्होंने भी बाबा को देखा है सभी का अनुभव यही कहता है कि बाबा की सूरत-मूरत व सीरत कोई साधारण न थी, उनका आलोकित मुखमण्डल, विशाल भाल, स्नेह-मयी दृष्टि व मधुर बोल सदव फरिश्ते स्वरूप का साक्षात्कार कराते, कई बार तो बाबा के बोल को समझना होता कि यह बाबा के बोल हैं व स्वयं भगवान के। उनकी दृष्टि से लगता मानो कोई सैंकड़ों मील गहरी झील की गहराई से झाँक रहा हो, जिसमें कभी शिक्षाएं होती, कभी परख, कभी प्यार भरा होता—इस प्रकार उनकी दृष्टि अव्यक्त बना उड़ जाने का मौन आमंत्रण देती।

बेहद त्यागी और तपस्वी मूर्त

बाबा का जीवन सम्पूर्ण मानव जगत के लिये त्याग व तपस्या का अद्वितीय उदाहरण है, उन्होंने क्षण मात्र में अपना सम्पूर्ण धन, तन और मन, सर्वस्व विश्व के कल्याणार्थ लगा दिया। इतना ही नहीं बाबा के साकार रथ ने स्वयं को निमित्त मात्र ही माना, मातेश्वरी को सर्वस्व सौंपकर वे सदा हल्के हो गए।

उनके हर कृत्य महान शिक्षा देते हैं

हर क्षेत्र का अनुभवी व विशाल बुद्धि होने के कारण बाबा के कर्मों में कलात्मकता व अपूर्व की कौशल स्पष्ट झलकता, व हर कर्म चरित्र बन जाते। उनमें हर कार्य को सुन्दरतम ढंग से करने उत्कंठा सदा रहती इस प्रकार हर कार्य को स्वयं कर वे औरों को सिखाते।

देही अभिमानी व निरंहकारी

विश्व की महानतम विभूति जिसको भगवान ने नयी सृष्टि रचना के निमित्त बनाया, कहता ! "बच्चे मैं तो विश्व सेवक हूँ, छोटे से छोटे कार्य को वे बड़े प्यार से करते, उनके बोल होते 'जैसा

कर्म मैं करूँगा मुझे देख और करेंगे' इस प्रकार अनेकानेक आत्माओं को बाबा ने देहीअभिमानी बनने का पाठ पक्का कराया।

साहसी, मेहनती एवं सदा अथक

ऊँची-ऊँची पहाड़ियों पर भी बाबा बच्चों के साथ दौड़ते चढ़ जाते, बच्चों को कभी यह भान न होता कि बाबा वृद्ध है। वे सदैव अथक रहकर हर कार्य चुस्ती व फुर्ती से निपटाते थे।

फ़राख़दिल

पूर्व के राजकुलोचित संस्कारों के कारण बाबा में बेहद फ़राख़दिली व दानवीरता थी। लौकिक में भी बाबा कभी भिक्षुक को खाली हाथ न लौटाते व मेहमानों का तहे दिल से स्वागत करते यही शिक्षा अलौकिक जीवन द्वारा भी बाबा ने बच्चों को दी।

कुशल पारखी एवं रूहानी मार्शल

बाबा की नजरों में अद्‌भुत परख शक्ति थी, उनकी पैनी निगाहें, जवाहरात की भाँति व्यक्ति का व्यक्तित्व व भविष्य की रेखाएँ उसे देखते ही आंक लेती, वे किसी होनहार बच्चे को देखकर फट से कहते बच्चा किंग बनेगा, अथवा फलाँ खुशबूदार फूल है।

सदा श्रीमत पर चलना व चलाना यही रूहानी मिलिट्री का अनुशासन है और बाबा ने उसके रूहानी मार्शल बन सदा यज्ञ रक्षक पिता का पार्ट बजाया।

निराशों की आश, कमजोरों का सहारा

बाबा जब कभी किसी आत्मा को निराश व कमजोर देखते तो ईश्वरीय बुद्धि के चातुर्य से उसमें एक अपूर्व शक्ति व उमंग भर देते। बाबा के प्यार भरे बोल—'मीठे बच्चे, महावीर बच्चे, नरे रतन बच्चे,' सुनते ही मानो थकी हारी आत्मा की जन्मों की थकान दूर हो जाती। वह 'स्वयं प्यार के सागर' भगवान की गोद में समाया हुआ अपने को अनुभव करती, उसे सचमुच ऐसा लगता कि बाबा ने मुझमें कोई दिव्य शक्ति भर दी है और वह पुलकित हो उठती।

सरल व लचीला स्वभाव

बाबा के व्यक्तित्व में एक विलक्षणता यह भी थी कि बाबा स्वयं भगवान का रथ होते हुए भी अति साधारण व सरलचित्त थे। समयानुसार वे बच्चों में बच्चे भी बन जाते और बुजुर्गों में अनुभवों की खान। उनकी व्यवहार कुशलता से हर आत्मा तृप्त व संतुष्ट होकर जाती। उनकी वाणी में सदा सार्थकता व संबंध की समीप भासना थी।

सच पूछो तो बाबा दिव्यता व पवित्रता के चलते-फिरते फव्वारे को तरह सदा बिछड़ी हुयी रूहों में रूहानियत भरते रहते। उनके नयनों में सारे विश्व के प्रति असीम रहम व कल्याण की भावना थी। उनका बच्चों-बूढ़ों सबको सहज भाव से बच्चे कहना सिद्ध करता है मानो सचमुच विश्व पिता अपने बच्चों से मिल रहा है।

वे सदा जागती ज्योति व दूरांदेशी बुद्धि थे। उनका सहज हर्षित मुख चेहरा व निश्चितता सर्व को सदा फिक्र से फारिग बेफिक्र बादशाह बना देती। इस भांति उस सृष्टि-पिता, महा मानव ने, दिव्य पुरुष ने जीवन पर्यन्त समस्त अशांत व दुखी व तृसित आत्माओं की सेवा में उनके हृदय के उत्पीड़न व दर्द समेटकर उन्हें सुख का सौरभ लुटाने में लगा दिया।

आज वो अव्यक्त हो सूक्ष्म वतनवासी हो गये और न सिर्फ उनकी स्मृतियाँ अंक शेष हैं वस्तुतः उनके अव्यक्त होने से ईश्वरीय सेवा की गति और तोव्रगामी बन गयी है। वे वहाँ से शांति पुंज (शांति स्तम्भ) बन के सारे विश्व में शांति के प्रकंपन अभिसरित कर रहे हैं, साथ ही सूक्ष्म मनस्पर्श द्वारा बच्चों का मार्ग दर्शन कर रहे हैं। ऐसे युग-पुरुष, श्रेष्ठतम विभूति के दिव्य अलौकिक कर्त्तव्य वर्तमान में मानव जीवन-उत्कर्ष में तो प्रेरणा के स्रोत हैं ही। साथ ही द्वापर काल से युगान्तर तक भक्त आत्माएँ उनके गुणों की माला फेरेंगी।

आध्यात्मिक सेवा समाचार

ब्र० क० लक्ष्मण, सत्यनारायण, कृष्णा नगर, देहली द्वारा संकलित

इन्दौर—इन्दौर स्थित ओमशान्ति भवन में स्वामी सत्य-मित्रानन्द गिरी जी के इन्दौर आगमन पर उनके द्वारा राजयोग शिविर का उद्घाटन दीप प्रज्ज्वलित करके किया। तत्पश्चात् ३० मिनिट तक "योग" विषय पर अपने विचारों से श्रोताओं को लाभान्वित किया। साथ ही प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के कार्यों की सराहना की। इस अवसर पर नगर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों से पूरा हाल भरा हुआ था कार्यक्रम के पश्चात् सभी आत्माओं ने संग्रहालय का अवलोकन भी किया।

इन्दौर स्थित ओमशान्ति भवन में साप्ताहिक कार्यक्रम ज्ञानांजलि के अन्तर्गत शनिवार १ दिसम्बर ८४ को मुख्य अतिथि के रूप में आचार्य रामकिशोर जी महाराज प्रमुख, अन्तर्राष्ट्रीय रामस्नेही सम्प्रदाय पधारे थे। आपने "संपत्ति आवश्यकता या आसक्ति" विषय पर अपने विचार सुनाये। कार्यक्रम बहुत सफल रहा।

बम्बई घाटकोपर— सेवा केन्द्र की ओर से राष्ट्रीय केमीकल एन्ड फर्टिलाइज़र लि० चेम्बुर में ईश्वरीय सेवा का कार्यक्रम आयोजित किया गया। भ्राता सोमा सुन्दरन् एक्जीक्यूटिव सेक्रेट्री के पुरुषार्थ पर ट्रेनिंग इन्स्टीटयूट के मैनेजर भ्राता चेटर्जी की ओर से तीन दिवसीय व्याख्यान माला के लिए निमंत्रण मिला। चरित्र निर्माण, दैवी गुणों की धारणा, स्वास्थ्य सुधार नये व्यसनों से मुक्ति इत्यादि विषयों पर व्याख्यान दिया गया। इस व्याख्यान माला से वहाँ के लोगों पर काफी प्रभाव पड़ा।

वर्धा—शहर के इतिहास में प्रथम बार "मानव दिव्यीकरण आध्यात्मिक मेला" का आयोजन महावीर स्मृति मैदान पर रखा गया। मेला उद्घाटक भ्राता बी० पाठक (अपर जिला अधिकारी वर्धा) अंतरराष्ट्रीय राजयोग केन्द्र आबू पर्वत से ब्र० कु० मनोहर इन्द्रा जी के

(शेष पृष्ठ ७ पर)

आओ खेल खेलें

ब्र० कु० प्रेम सागर, लक्ष्मी नगर, देहली

नीचे हम एक ४९ खानों की बनी सारणी का चित्र दे रहे हैं ! जिसमें तीन प्रकार के खाने हैं। पहला सफेद, दूसरा लिखा हुआ, और तीसरा काला है, अब आपको सफेद वाले खाने में सही अक्षर भरना है। जिससे अन्त में आपको सभी शब्दों को पढ़ने के पश्चात कोई न कोई बापदादा द्वारा दिया गया धारणा युक्त सलोगन मिलेगा। ये सलोगन लगभग १० शब्दों का होगा। जब आप सफेद वाले खाली खानों को भर लेंगे तो उसके पश्चात अपने उत्तर का सही मिलान कीजिए जो कि इसी अंक में कहीं पर दिया हुआ होगा। इस खेल को खेलने के लिए निर्धारित समय १० मिनट।

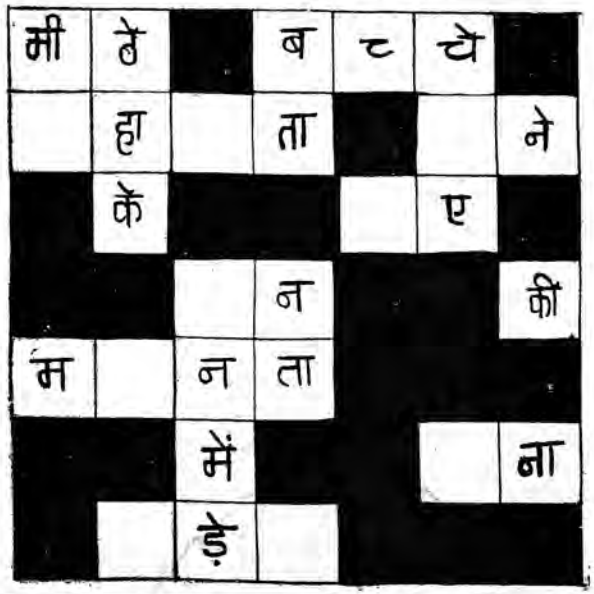

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, सम्पादक, बी ९/१९ कृष्णानगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा ग्रन्थ भारती, शाहदरा, दिल्ली-३२ से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D, (E)—70